ੴ सतिगुर प्रसादि।

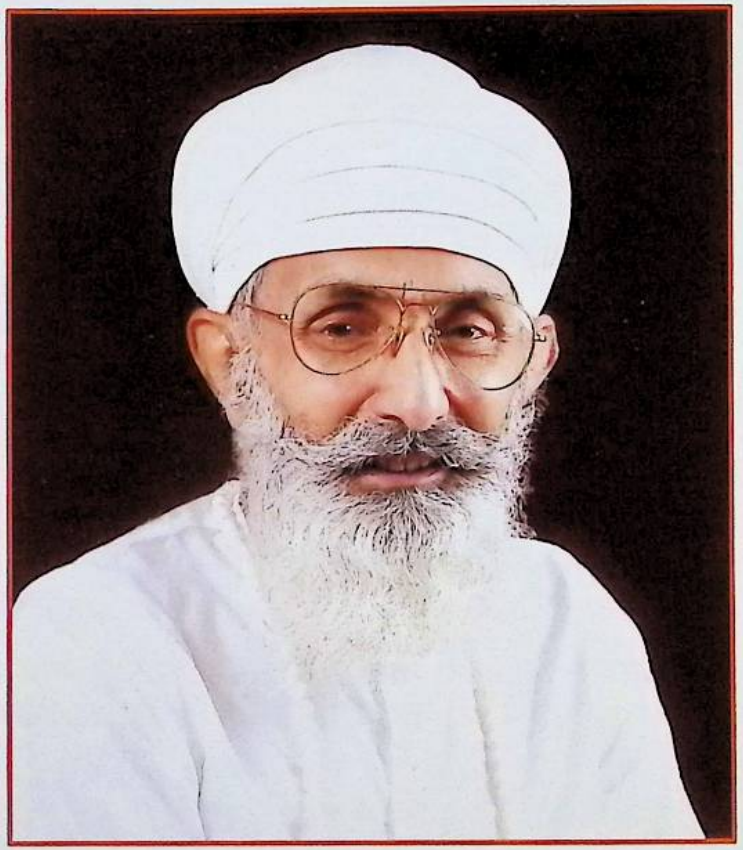

सतिगुरु दलीप सिंह जी द्वारा लिखे लेख:

ੴ सतिगुर प्रसादि।

धर्मांतरण कानून से नहीं, अपनी शक्ति से रुकेगा। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

भारत की कुछ संस्थाएं कानून के सहारे से विदेशी धर्मों द्वारा किए जा रहे 'धर्मांतरण' को रोकने की बात करती हैं तथा वह धर्मांतरण रोकने हेतु नए कानून बनाने के लिए प्रयत्नशील है। हम "नामधारी सिख" उन सभी संस्थाओं से नम्रता से पूछते हैं कि आज तक जिन लोगों ने धर्मांतरण किया है, उन्होंने किस भारतीय कानून की सहायता से धर्मांतरण किया है? कानून तो कमजोरों की भाषा है। यदि बिना किसी कानूनी सहायता से विदेशी धर्मों वाले लोग, हमारे देश में आकर धर्मांतरण कर सकते हैं; तो हम उनको अपने ही देश में बिना किसी कानूनी सहायता के, धर्मांतरण से रोक क्यों नहीं सकते? प्रश्न तो यह है कि क्या हम सचमुच ही धर्मांतरण रोकना चाहते हैं या केवल बातें ही करना चाहते हैं?

हम "नामधारी सिखों" ने बिना किसी कानून की सहायता लिए व बिना किसी बड़ी संस्था की सहायता लिए, एक वर्ष के भीतर ही पूर्ण रूप से धर्मांतरण किए हुए 25 गांव में से धर्मांतरण करने वालों का सफाया कर दिया है तथा वहां के लोगों को सिखी (अपने भारतीय धर्म) में वापस लाकर उनका विश्वास सिखी (अपने भारतीय धर्म) में दृढ़ किया है। और, सबसे बड़ी बात कि हमने इस चीज का मीडिया में भी कोई प्रचार नहीं किया।

यदि हम "नामधारी संप्रदाय" के थोड़े से सिख: बिना किसी बड़ी संस्था की सहायता से, बिना किसी कानूनी सहायता के, जमीनी स्तर पर काम करते हुए; 25 गांव में से धर्मांतरण किए लोगों को वापस ला सकते हैं और धर्मांतरण रोक सकते हैं; तो जो बड़ी-बड़ी संस्थाएं हैं वह यह कार्य क्यों नहीं कर सकती?

सभी धर्मों का विकास धर्मांतरण से ही हुआ है। क्योंकि प्रत्येक धर्म के विकास का एक ही उपाय है और वह है – धर्मांतरण (दूसरों को अपने धर्म में शामिल करना)। सचाई तो यह है कि धर्मांतरण अवश्य होना चाहिए। परन्तु, हमारे देश में वह धर्मांतरण; भारतीय धर्मों द्वारा होना चाहिए न कि विदेशी धर्मों द्वारा। यदि हम विदेशी धर्मों से होने वाले धर्मांतरण को रोकना चाहते हैं, तो हमें अपना अधिकतर समय लोगों में जाकर बिताना चाहिए। मंदिर, गुरुद्वारे, आश्रम, डेरे आदि धर्म-स्थानों में बिराजमान संत-महात्मा जी, खुद लोगों में जाकर उनसे मिलना आरंभ करें और अपने सेवकों को भी प्रेरणा दें कि लोगों से प्रेम करें व लोगों की समस्याएं सुनकर, उनका समाधान करने का प्रयत्न करें। लोगों से प्रेम करने व उनकी सेवा करने से अपने धर्म का प्रचार होगा और धर्मांतरण अपने आप ही रुकेगा।

प्रत्येक धर्म स्थान मंदिरों आदि में बढ़िया विद्धालय (स्कूल), औषधालय (हस्पताल) आदि का प्रबंध होना चाहिए जो गरीबों के लिए नि:23शुल्क हों या कम पैसे लें; इससे भी लोग धर्मांतरण से रुकेंगे। क्योंकि विदेशियों ने विद्धालय (स्कूल) तथा हस्पताल बनाकर ही लोगों को अपनी ओर खींचा है। अर्थात: विदेशियों ने लोगों की आवश्यकताएं पूरी की हैं, जो हमें भी करनी चाहिए थीं; लेकिन हमने पूरी नहीं की। किसी समय हमारे देश में भी प्रत्येक धर्म स्थान के साथ विद्धालय (स्कूल), औषधालय (हस्पताल) आदि होते थे, परन्तु आज वह नहीं हो रहे और हमें ऐसे कार्य करने चाहिए।

मंदिर-गुरुद्वारों में जो भी कीमती पत्थर, कीमती चंदोए, सोना, चांदी आदि लगते हैं, वह सारी माया: अपने धर्म के लोगों को उन्नत करने के लिए व उनका उद्धार करने के लिए लगनी चाहिए। क्योंकि धर्म का तो अर्थ ही 'प्रेम, सेवा व गरीब का उद्धार करना' है। मंदिर-गुरुद्वारों का धन यदि निर्धनों को युक्तिपूर्वक दिया जाए तथा उनसे प्रेम किया जाए; तो धर्मांतरण हो ही नहीं सकता।

जब तक भारत के लोग: आक्रामक सोच, आक्रामक वृति नहीं अपनाएंगे, आक्रामक कार्य नहीं करेंगे; तब तक भारत देश, भारतीय संस्कृति तथा भारत के धर्मों की सुरक्षा होनी असंभव है। जो आक्रमण करता है, वह ही सुरक्षित रहता है। इस कारण हम भारतवासियों को जीवित रहने के लिए आक्रामक सोच, वृति तथा कार्य करने अत्यंत आवश्यक हैं। इनके बिना हमारी सुरक्षा हो ही नहीं सकती। हमें किसी ने गुलाम इस लिए बनाया क्योंकि, हमने किसी को गुलाम नहीं बनाया। यदि हमने इंग्लैंड को गुलाम बनाया होता तो वह हमें गुलाम नहीं बना पाते।

यदि हम भारतवासी, सच्चे दिल से धर्मांतरण रोकना चाहते हैं, तो जो लोग हमारा धर्मांतरण कर रहे हैं; उन लोगों का ही धर्म-परिवर्तन करके, उनको अपने धर्म में शामिल कर लेना चाहिए। जब धर्मांतरण करने वाले लोग ही हमारे धर्म में शामिल हो जाएंगे, तो धर्मांतरण कैसे होगा? लेकिन हमारी इतनी संकीर्ण सोच है कि यदि विदेशी धर्मों के लोग हमारे धर्म में शामिल होना भी चाहें; तो हम उन्हें अपने धर्म में शामिल ही नहीं करते। हम तो उनसे नफरत करते हैं और कहते हैं कि "वह बुरे हैं। वह हमारे धर्म में शामिल नहीं हो सकते"। 'बुरे' कहने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता। परन्तु, हमारे धर्म को मानने वालों की गिनती अवश्य कम हो जाती है तथा बढ़ती नहीं। हमें उन लोगों से प्रेम करके, उनकी ज़रूरतों को पूरा करके, उन्हें अपने धर्म में शामिल कर व उन्हें समान दर्जा देकर अपने धर्म को प्रफुलित करने की आवश्यकता है। हमारे भारतीय धर्मों के पास पैसे की कमी नहीं है, केवल अपना धर्म फैलाने की सोच की कमी है। अपनी सोच को विशाल तथा प्रगतिशील बनाकर उस कमी को पूरा कीजिए; धर्मांतरण बिना किसी कानूनी सहायता के अपने आप रुकेगा।

प्रिय सज्जनों! आप तो हम "नामधारिओं" से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, आप बहुत बड़े कार्य कर सकते हैं, धर्मांतरण रोक सकते हैं और धर्मांतरण किए हुए लोगों को वापस ला सकते हैं।

यदि हम सचमुच में सही रूप से धर्मांतरण रोकना चाहते हैं; तो हमें कानून के चक्कर को छोड़कर, लोगों से मिलकर उनसे प्रेम करना चाहिए व उनकी आवश्यकताएं पूरी करनी चाहिए। इस लिए कानूनी सहारे की बजाए, हमें अपनी बल व बुद्धि से कार्य करना चाहिए। यदि हम, लोगों से मेल बढ़ाकर प्रेम करेंगे, तो जनशक्ति जुड़ने से हम इतने बलशाली हो जाएंगे कि कानून हमारी सहायता लेगा; हमें कानून की सहायता नहीं लेनी पड़ेगी। इस तरह से धर्मांतरण भी अपने आप ही रुक जाएगा व हमारे भारतीय धर्मों की प्रगति शुरू हो जाएगी। आओ हम सब मिलकर हमारे भारतीय धर्मों को प्रफुलित करें! जब हम बढ़ना शुरू कर देंगे, तो घटना अपने आप कम हो जाएगा और दूसरे धर्म भी बढ़ने रुक जाएंगे।

धर्मांतरण कानून से नहीं,अपनी शक्ति से रुकेगा : सतगुरु दलीप सिंह

दिव्य रणभूमि ब्यूरो

भारत की कुछ संस्थाएं कानून के सहारे से विदेशी धर्मों द्वारा किए जा रहे 'धर्मांतरण' को रोकने की बात करती हैं तथा वह धर्मांतरण रोकने हेतु नए कानून बनाने के लिए प्रयत्नशील है। हम नामधारी सिख उन सभी संस्थाओं से नम्रता से पूछते हैं कि आज तक जिन लोगों ने धर्मांतरण किया है, उन्होंने किस भारतीय कानून की सहायता से धर्मांतरण किया है? कानून तो कमजोरों की भाषा है। यदि बिना किसी कानूनी सहायता से विदेशी धर्मों वाले लोग, हमारे देश में आकर धर्मांतरण कर सकते हैं; तो हम उनको अपने ही देश में बिना किसी कानूनी सहायता के, धर्मांतरण से रोक क्यों नहीं सकते? प्रश्न तो यह है कि क्या हम सचमुच ही धर्मांतरण रोकना चाहते हैं या केवल बातें ही करना चाहते हैं?

नामधारी सिखों ने बिना किसी कानून की सहायता लिए व बिना किसी बड़ी संस्था की सहायता लिए, एक वर्ष के भीतर ही पूर्ण रूप से धर्मांतरण किए हुए 25 गांवों में धर्मांतरण करने वालों का सफाया कर दिया है तथा वहां के लोगों को सिख (अपने भारतीय धर्म) में वापस लाकर उनका विश्वास सिख में दृढ़ किया है। और, सबसे बड़ी बात कि हमने इस कार्य का मीडिया में भी कोई प्रचार नहीं किया। यदि नामधारी संप्रदाय के थोड़े से सिख बिना किसी बड़ी संस्था की सहायता से, बिना किसी कानूनी सहायता के, जमीनी स्तर पर काम करते हुए 25 गांव में हुए धर्मांतरण किए लोगों को वापस ला सकते हैं और धर्मांतरण रोक सकते हैं, तो जो बड़ी-बड़ी संस्थाएं हैं वह यह कार्य क्यों नहीं कर सकती? सभी धर्मों का विकास धर्मांतरण से ही हुआ है। क्योंकि प्रत्येक धर्म के विकास का एक ही उपाय है और वह है धर्मांतरण (दूसरों को अपने धर्म में शामिल करना)। सच्चाई तो यह है कि धर्मांतरण अवश्य होना चाहिए। परन्तु, हमारे देश में वह धर्मांतरण भारतीय धर्मों द्वारा ही होना चाहिए न कि विदेशी धर्मों द्वारा। यदि हम विदेशी धर्मों से होने वाले धर्मांतरण को रोकना चाहते हैं, तो हमें अपना अधिकतर समय लोगों में जाकर बिताना चाहिए। हमारा सुझाव है कि मंदिर, गुरुद्वारे, आश्रम, डेरे आदि धर्म स्थानों में विराजमान संत-महात्मा , खुद लोगों में जाकर उनसे मिलना आरंभ करें और अपने सेवकों को भी प्रेरणा दें कि लोगों से प्रेम करें व लोगों की समस्याएं सुनकर, उनका समाधान करने का प्रयत्न करें। लोगों से प्रेम करने व उनकी सेवा करने से अपने धर्म का प्रचार होगा और धर्मांतरण अपने आप ही रुकेगा। प्रत्येक धर्म स्थान मंदिरों आदि में बढ़िया विद्यालय (स्कूल), औषधालय (हस्पताल) आदि का प्रबंध होना चाहिए जो गरीबों के लिए निशुल्क हों या कम पैसे लें, इससे भी लोग धर्मांतरण से रुकेंगे। क्योंकि विदेशियों ने विद्यालय (स्कूल) तथा हस्पताल बनाकर ही लोगों को अपनी तरफ खींचा है। अर्थात विदेशियों ने लोगों की आवश्यकताएं पूरी की हैं, जो हमें भी करनी चाहिए थी, लेकिन हमने पूरी नहीं की। किसी समय हमारे देश में भी प्रत्येक धर्मस्थान के साथ विद्यालय (स्कूल), औषधालय (हस्पताल) आदि होते थे, परन्तु आज वह नहीं हो रहे और हमें ऐसे कायम करने चाहिए। मंदिर-गुरुद्वारों में जो भी कीमती पत्थर, कीमती चंदोए, सोना,चांदी आदि लगते हैं, वह सारी माया अपने धर्म के लोगों को उन्नत करने के लिए व उनका उद्धार करने के लिए लगनी चाहिए। क्योंकि धर्म का तो अर्थ ही 'प्रेम, सेवा व गरीब का उद्धार करना' है। यदि निर्धनो को मंदिर-गुरुद्वारों का धन युक्तिपूर्वक दिया जाए तथा उनसे प्रेम किया जाए तो धर्मांतरण हो ही नहीं सकता। जब तक भारत के लोग आक्रामक सोच, आक्रामक वृति नहीं अपनाएंगे, आक्रामक कार्य नहीं करेंगे, तब तक भारत देश, भारतीय संस्कृति तथा भारत के धर्मों की सुरक्षा होनी असंभव है। जो आक्रमण करता है, वह ही सुरक्षित रहता है। इस कारण हम भारतवासियों को जीवित रहने के लिए आक्रामक सोच, वृति तथा कार्य करने अत्यंत आवश्यक हैं। इनके बिना हमारी सुरक्षा हो ही नहीं सकती। हमें किसी ने गुलाम इस लिए ही बनाया क्योंकि, हमने किसी को गुलाम नहीं बनाया। यदि हमने इंग्लैंड को गुलाम बनाया होता तो वह हमें गुलाम नहीं बना पाते।

यदि हम भारतवासी, सच्चे दिल से धर्मांतरण रोकना चाहते हैं, तो जो लोग हमारा धर्मांतरण कर रहे हैं, उन लोगों का ही धर्म-परिवर्तन करके, उनको अपने धर्म में शामिल कर लेना चाहिए। जब धर्मांतरण करने वाले लोग ही हमारे धर्म में शामिल हो जाएंगे, तो धर्मांतरण कैसे होगा? लेकिन हमारी इतनी संकीर्ण सोच है कि यदि विदेशी धर्मों के लोग हमारे धर्म में शामिल होना भी चाहें, तो हम उन्हें अपने धर्म में शामिल ही नहीं करते। हम तो उनसे नफरत करते हैं और कहते हैं कि वह बुरे हैं। वह हमारे धर्म में शामिल नहीं हो सकते। 'बुरे' कहने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता। परन्तु, हमारे धर्म को मानने वालों की गिनती अवश्य कम हो जाती है तथा बढ़ती नहीं। हमें उन लोगों से प्रेम करके, उनकी जरूरतों को पूरा करके, उन्हें अपने धर्म में शामिल कर व उन्हें सम्मान का दर्जा देकर अपने धर्म को प्रफूलित करने की आवश्यकता है। हमारे भारतीय धर्मों के पास पैसे की कमी नहीं है, केवल अपना धर्म फैलाने की सोच की कमी है। अपनी सोच को विशाल तथा प्रगतिशील बनाकर उस कमी को पूरा कीजिए , धर्मांतरण बिना किसी कानूनी सहायता के अपने आप रुकेगा।

प्रिय सज्जनों! आप तो हम नामधारियो से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, आप बहुत बड़े कार्य कर सकते हैं, धर्मांतरण रोक सकते हैं और धर्मांतरण किए हुए लोगों को वापस ला सकते हैं। यदि हम सचमुच में सही रूप से धर्मांतरण रोकना चाहते हैं; तो हमें कानून के चक्कर को छोड़कर, लोगों से मिलकर उनसे प्रेम करना चाहिए व उनकी आवश्यकताएं पूरी करनी चाहिए। इस लिए कानूनी सहारे को बजाए, हमें अपनी बल व बुद्धि से कायम करना चाहिए। यदि हम, लोगों से मेल बढ़ाकर प्रेम करेंगे, तो जनशक्ति जुड़ने से हम इतने बलशाली हो जाएंगे कि कानून हमारी सहायता लेगा, हमें कानून की सहायता नहीं लेनी पड़ेगी। इस तरह से धर्मांतरण भी अपने आप ही रुक जाएगा व हमारे भारतीय धर्मों की प्रगति शुरू हो जाएगी। आओ हम सब मिलकर हमारे भारतीय धर्मों को प्रफूलत करें! जब हम बढ़ना शुरू कर देंगे, तो धर्मांतरण अपने आप कम हो जाएगा और दूसरे धर्म भी बढ़ने रुक जाएंगे।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

भारत में धर्मांतरण कैसे रोका जा सकता है? (ठाकुर दलीप सिंह जी)

संभव है कि हम भारतियों ने कभी विचार ही नहीं किया होगा कि हम भारतवासियों को विदेशी धर्मों वालों ने अपने धर्म में परिवर्तित क्यों और कैसे कर लिया? विदेशियों ने हमें परिवर्तित इस लिये कर लिया; क्योंकि, हमने उनको परिवर्तित नहीं किया (हिन्दू, सिख, जैन, बुद्ध नहीं बनाया)। यदि हमने उनको, अपने धर्म में परिवर्तित किया होता, तो वह हमें परिवर्तित नहीं कर पाते। मेरी बात विलक्षण तथा नई होने के कारण, शायद आपको प्रवान नहीं होगी। यदि आप इस बात पर विचार करेंगे तो अवश्य सहमत हो जाएंगे।

प्रकृति का अटल नियम है जो सभी जीवों पर लागू होता है 'खाओ, नहीं तो खाए जाओगे'। इस लिए, यदि हमें जीवित रहना है तथा प्रगति करनी है तो दूसरों को खाना अत्यंत आवश्यक है। सभी जीव किसी न किसी रूप में ऐसा करके ही जीवित रह पाते हैं। अपने को दयालु तथा सभ्य समझने वाले मनुष्य ने आजतक जितनी भी प्रगति की है, तथा पृथ्वी पर राज कर रहा है; बाकी जीवों को खा कर या उनका उपयोग करके ही कर रहा है। इसी प्रकार से आज तक जितने भी धर्मों ने प्रगति की हैं, दूसरों को खा कर (धर्मांतरण करके) ही की है। जीवन की इस अटल सच्चाई व प्रकृति के नियमों को प्रवान करते हुए और अपनी सुरक्षा के लिए; हमें दूसरे पर आक्रमण करना अत्यंत आवश्यक है। इंग्लिश की एक कहावत है ' Best defense is the best offence ' यह कहावत हाकी, फुटबाल आदि खेलने वाले खिलाड़ी उपयोग करते हैं। इसका अर्थ है: "आपकी सुरक्षा तभी है, जब आप दूसरी टीम पर आक्रमण करके रखोगे; ताकि उनकी गेंद इधर आ ही न पाए।" इसी प्रकार से प्रकृति का यह नियम है कि आक्रमण इतना करके रखो कि दूसरा, आपकी ओर आ ही नहीं पाए।

हम भारतवासी धर्मों ने आक्रमण तो क्या करना था, हमने तो; जो विदेशी धर्म आए, उनको शर्ण देकर, उनको ही प्रफुलित किया। विदेशी धर्मों के प्रचार हित, भारतीय राजाओं ने उनको धर्म-स्थान बनवा कर दिए तथा अपने ऊपर आक्रमण करने के लिए हर प्रकार से उनकी सहायता की। उनका टैक्स (कर) माफ कर दिया; जबकि भारतवासियों का माफ नहीं किया। पृथ्वी राज चौहान ने "मुहम्मद गौरी" तथा राजा रत्न राओ ने "अलाओदीन खिलजी" जैसे विदेशी धर्मों वाले विदेशी हमलावर विरोधिओं को जीवित छोड़ दिया। हमारी ऐसी गल्तियों के कारण ही विदेशी धर्मों वाले लोग (मुहम्मद गौरी और अलाओदीन खिलजी आदि) हमारे राजा बनें तथा उनके राजा बनने से, विदेशी धर्म भारत में प्रफुलित हो पाए। विदेशी लोगों ने हम भारतियों पर काबिज होकर, हमारे देश को गुलाम बनाया और भारतियों से ही कर (टैक्स) लेकर, उसी आमदनी से हम भारतियों का धर्मांतरण कर दिया तथा हमारी सभ्यता नष्ट कर दी।

सभी जीवों पर लागू होने वाले प्रकृति के अटल नियमों को हमें भी प्रवान कर लेना चाहिए कि आक्रमण करके रखोगे, तभी आपकी सुरक्षा होगी। यदि आप आक्रमण नहीं करोगे , तो दूसरा आप पर आक्रमण कर देगा। इस लिए, भारतीय धर्मों का धर्मांतरण रोकने हेतु, हमें धर्मांतरण करने वालों का ही धर्मांतरण कर; उन्हें अपने धर्म में शामिल करना चाहिए था और अभी भी करना चाहिए। क्योंकि, आक्रमण से ही सुरक्षा है। "**भारतीय धर्मों के पास पैसे की कमी नहीं है, प्रगति करने वाली सोच की कमी है**"। उस कमी को दूर करके, अपने भारतीय धर्मों को बढ़ाना चाहिए। मंदिर-गुरुद्वारों में जो भी कीमती पत्थर, चंदोए, सोना, चांदी आदि लगते हैं, वह अधिकतर माया : अपने धर्म के प्रसार के लिए लगनी चाहिए।

भारतियों को अपनी "***धर्म निरपेक्ष, दयालु तथा त्यागी***" सोच को बदलकर; धार्मिक, आक्रामक, लालची तथा अपना धर्म बढ़ाने वाली सोच अपनानी चाहिए; तभी भारतीय धर्मों की सुरक्षा तथा उन्नति हो सकती है। आक्रामक वृति होने के कारण ही आज ईसाई भाईओं के 80 देश हैं तथा मुसलमान भाईओं के 32 देश हैं। जबकि, हमारी अन-आक्रामक व साऊ/ भोली वृति होने के कारण, हमारा तो भारत देश भी भारतीय धर्मों के लिए 'अपना' नहीं बचा है।

इस लिए, भारतीय धर्मों वालो! हम भारतियों को अपने देश में विदेशी धर्मांतरण रोकने हेतु, विदेशी धर्मों वालों का अपने भारतीय धर्मों में 'धर्मांतरण' करना अत्यंत आवश्यक है। ऐसा करके ही भारतीय धर्म जीवित रह सकते हैं तथा धर्मांतरण रुक सकता है।

जिला सूचना विज्ञान अधिकारी ने प्रेक्षकों और एजेन्टों

है। जनपद में कुल 1507 बूथ हैं, जिस पर प्रत्येक मतदेय स्थल पर 1 बैलेट यूनिट, 1 कन्ट्रोल

दी कि 25 जनवरी को 7535 कार्मिकों की टेउनिंग करायी जा चुकी है। बैठक में 235-

कुमार सहित राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

वाले युवाओं के लिए कुछ मतदान केंद्रों में सेल्फी पॉइंट भी बनाए जा रहे हैं।

भारत में धर्मांतरण कैसे रोका जा सकता है -सतगुरु दलीप सिंघ जी का संदेश

रिपोर्टर सुमित कुमार दैनिक लोक जनसंदेश

कानपुर नगर - संभव है कि हम भारतियों ने कभी विचार ही नहीं किया होगा कि हम भारतवासियों को विदेशी धर्मों वालों ने अपने धर्म में परिवर्तित क्यों और कैसे कर लिया? विदेशियों ने हमें परिवर्तित इस लिये कर लिया; क्योंकि, हमने उनको परिवर्तित नहीं किया (हिन्दू , सिख , जैन , बुद्ध नहीं बनाया)। यदि हमने उनको, अपने धर्म में परिवर्तित किया होता, तो वह हमें परिवर्तित नहीं कर पाते। मेरी बात विलक्षण तथा नई होने के कारण, शायद आपको प्रवान नहीं होगी । यदि आप इस बात पर विचार करेंगे तो अवश्य सहमत हो जाएंगे।प्रकृति का अटल नियम है जो सभी जीवों पर लागू होता है ः'खाओ, नहीं तो खाए जाओगे'। इस लिए, यदि हमें जीवित रहना है तथा प्रगति करनी है तो दूसरों को खाना अत्यंत आवश्यक है। सभी जीव किसी न किसी रूप में ऐसा करके ही जीवित रह पाते हैं। अपने को दयालु तथा सभ्य समझने वाले मनुष्य ने आजतक जितनी भी प्रगति की है, तथा पृथ्वी पर राज कर रहा है; बाकी जीवों को खा कर या उनका उपयोग करके ही कर रहा है। इसी प्रकार से आज तक जितने भी धर्मों ने प्रगति की हैं, दूसरों को खा कर (धर्मांतरण करके) ही की है। जीवन की इस अटल सच्चाई व प्रकृति के नियमों को प्रवान करते हुए और अपनी सुरक्षा के लिए; हमें दूसरे पर आक्रमण करना अत्यंत आवश्यक है। इंग्लिश की एक कहावत है ः Best defense is the best offence ः यह कहावत हाकी, फुटबाल आदि खेलने वाले खिलाड़ी उपयोग करते हैं। इसका अर्थ है-आपकी सुरक्षा तभी है, जब आप दूसरी टीम पर आक्रमण करके रखोगे; ताकि उनकी गेंद इधर आ ही न पाए। इसी प्रकार से प्रकृति का यह नियम है कि आक्रमण इतना करके रखो कि दूसरा, आपकी ओर आ ही नहीं पाए। हम भारतवासी धर्मों ने आक्रमण तो क्या करना था, हमने तो; जो विदेशी धर्म आए, उनको शर्ण देकर, उनको ही प्रफुलित किया। विदेशी धर्मों के प्रचार हित, भारतीय राजाओं ने उनको धर्म-स्थान बनवा कर दिए तथा अपने ऊपर आक्रमण करने के लिए हर प्रकार से उनकी सहायता की। उनका टैक्स (कर) माफ कर दिया; जबकि भारतवासियों का माफ नहीं किया। पृथ्वी राज चौहान ने मुहम्मद गौरी तथा राजा रत्न राओ ने अलाओदीन खिलजी जैसे विदेशी धर्मों वाले विदेशी हमलावर विरोधिओं को जीवित छोड़ दिया। हमारी ऐसी गल्तियों के कारण ही विदेशी धर्मों वाले लोग (मुहम्मद गौरी और अलाओदीन खिलजी आदि) हमारे राजा बनें तथा उनके राजा बनने से, विदेशी धर्म भारत में प्रफुलित हो पाए। विदेशी लोगों ने हम भारतियों पर काबिज होकर, हमारे देश को गुलाम बनाया और भारतियों से ही कर (टैक्स) लेकर, उसी आमदनी से हम भारतियों का धर्मांतरण कर दिया तथा हमारी सभ्यता नष्ट कर दी। सभी जीवों पर लागू होने वाले प्रकृति के अटल नियमों को हमें भी प्रवान कर लेना चाहिए कि आक्रमण करके रखोगे, तभी आपकी सुरक्षा होगी। यदि आप आक्रमण नहीं करोगे , तो दूसरा आप पर आक्रमण कर देगा। इस लिए, भारतीय धर्मों का धर्मांतरण रोकने हेतु, हमें धर्मांतरण करने वालों का ही धर्मांतरण कर; उन्हें अपने धर्म में शामिल करना चाहिए था और अभी भी करना चाहिए। क्योंकि, आक्रमण से ही सुरक्षा है। भारतीय धर्मों के पास पैसे की कमी नहीं है, प्रगति करने वाली सोच की कमी है। उस कमी को दूर करके, अपने भारतीय धर्मों को बढ़ाना चाहिए। मंदिर-गुरुद्वारों में जो भी कीमती पत्थर, चंदोए, सोना, चांदी आदि लगते हैं, वह अधिकतर माया = अपने धर्म के प्रसार के लिए लगनी चाहिए। भारतियों को अपनी धर्म निरपेक्ष, दयालु तथा त्यागी सोच को बदलकर; धार्मिक, आक्रामक, लालची तथा अपना धर्म बढ़ाने वाली सोच अपनानी चाहिए; तभी भारतीय धर्मों की सुरक्षा तथा उन्नति हो सकती है। आक्रामक वृति होने के कारण ही आज ईसाई भाईओं के 80 देश हैं तथा मुसलमान भाईओं के 32 देश हैं। जबकि, हमारी अन-आक्रामक व साऊ/ भोली वृति होने के कारण, हमारा तो भारत देश भी भारतीय धर्मों के लिए 'अपना' नहीं बचा है। इस लिए, भारतीय धर्मों वालो! हम भारतियों को अपने देश में विदेशी धर्मांतरण रोकने हेतु, विदेशी धर्मों वालों का अपने भारतीय धर्मों में 'धर्मांतरण' करना अत्यंत आवश्यक है। ऐसा करके ही भारतीय धर्म जीवित रह सकते हैं तथा धर्मांतरण रुक सकता है।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

हिंदू भाइयो! धर्म परिवर्तन के लिए ईसाइयों को दोष मत दीजिए।

(ठाकुर दलीप सिंह जी)

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने हिंदुओं को संदेश देते हुए कहा "हिन्दू धर्म सर्व प्राचीन है। परंतु, सर्व प्राचीन होते हुए भी, हिन्दू धर्म अपनी जन्म भूमि भारत में ही समाप्त होता जा रहा है। हिन्दू धर्म की ऐसी दशा का कारण: केवल हिन्दू आगुओं की संकीर्ण व नकारात्मक सोच है, जिन्होंने कभी अपने धर्म को प्रफुलित करने का सोचा ही नहीं। यदि कोई विदेशी धर्मों वाले हिन्दू धर्म में शामिल होना भी चाहते थे, तो हिन्दू धर्म-आचार्यों ने उन्हें अपने धर्म में शामिल करने से मना कर दिया। 1320 ई. में लद्दाख के राजा रिनचिन को हिन्दू धर्म-आचार्य देवस्वामी ने दीक्षा देने से मना कर दिया। उसे पीर बुलबुल शाह ने मुसलमान बना लिया। राजा रिनचिन ने इस्लाम ग्रहण करते ही पूरा कश्मीर मुसलमान बना दिया। कुछ समय उपरांत, कश्मीर के मुसलमानों ने महाराजा गुलाब सिंह की शरण में, पुनः हिन्दू बनने की प्रार्थना की। उस समय के धर्म आचार्यों ने मुसलमान बन चुके हिंदुओं को, वापिस हिन्दू बनाने से इनकार कर दिया। ऐसी संकीर्ण नकारात्मक सोच कारण ही; हिन्दू धर्म प्रफुलित होने की बजाय सिकुड़ गया है"।

"हिन्दू भाइयो! आत्म-विश्लेषण कीजिए। भारत में धर्म परिवर्तन करके, अपना धर्म फैलाने में ईसाइयों का कोई दोष नहीं है; दोष आपका है। आज ईसाइयों के 108 देश हैं और आप हिंदुओं का तो भारत भी "अपना" नहीं रहा। आप कहते हैं "ईसाई छल-कपट, लालच, पाखंड व

हिंसा करके धर्म परिवर्तन कर रहे हैं"। अपना धर्म प्रफुलित करने हेतु, ईसाई जो भी कार्य कर रहे हैं; धर्म प्रफुलित करने के तो वही ढंग हैं। ऐसे ढंगों से ही मानव जाति ने प्रगति की है तथा पृथ्वी पर राज कर रही है।

आप ही विचार कीजिए: हिंसा, छल-कपट, लालच आदि किए बिना प्रगति कैसे हो सकती है? यदि हो सकती होती, तो आप "हिंदुओं" ने प्रगति क्यों नहीं कर ली? हिन्दू धर्म: सर्व-प्राचीन होते हुए भी, अपनी नैतिकता और संकीर्ण सोच के कारण सिकुड़ता रहा है। और ईसाई: नैतिकता के बंधनों से मुक्त होकर, अपनी प्रगतिशील सोच के कारण पूरे विश्व में छा गए हैं। हिन्दू भाइयो! आप तो अपनी नैतिकता का छुनछुना लेकर, भारत में ही समाप्त होते जा रहे हो। आप हिंदुओं ने, अपना धर्म क्यों नहीं फैलाया? या, आपने ईसाइयों के देशों में जाकर, ईसाइयों का धर्म-परिवर्तन क्यों नहीं कर लिया? "बुद्ध धर्म" आज 10 देशों में फैला हुआ है; क्योंकि उनकी सोच अपना धर्म फैलाने की थी। परंतु, आप हिंदुओं की तो सोच ही घटने की है। आश्चर्य है, आप ईसाइयों को दोष दे रहे हैं! क्यों? यदि बुद्ध धर्म 10 देशों में फैल सकता था; तो हिन्दू धर्म क्यों नहीं फैल सकता था?

भारत में हो रहे धर्म परिवर्तन में दोष: ईसाईयों का नहीं, आपका है। यदि अपना धर्म प्रफुलित करना है; तो धर्म प्रफुलित करने वाले ईसाईयों जैसे, या उनसे भी बढ़िया कार्य आप भी कीजिए। जैसे: छल-कपट, हिंसा आदि कार्य, भगवान श्री कृष्ण चंद्र जी ने महाभारत में करके, लक्ष्य-प्राप्ति की थी। उसी कृष्ण जी के उपासक होते हुए; आप भी धर्म प्रफुलित करने के लक्ष्य को महान मानकर, आवश्यकता अनुसार नैतिक-अनैतिक सभी प्रकार के कार्य कीजिए।

अभी तक तो आपका लक्ष्य, नैतिकता के नियमों को दृढ़ करना रहा है; अपने हिन्दू धर्म को जीवित रखना व प्रफुलित करना तो आपने लक्ष्य बनाया ही नहीं। आपको यह निश्चय कर लेना चाहिए कि लक्ष्य-प्राप्ति महान है। और, लक्ष्य-प्राप्ति के लिए, हर नैतिक-अनैतिक कार्य करना योग्य है। कृपया! विचारवान बन कर, ईसाईयों की गलती निकालनी बंद कीजिए। अपनी संकीर्ण सोच को विशाल सोच में परिवर्तित करके, हिन्दू धर्म को प्रफुलित कीजिए। हम नामधारी सिख आपके साथ हैं"।

हिंदू भाइयो! धर्म परिवर्तन के लिए ईसाइयों को दोष मत दीजिए: ठाकुर दलीप सिंह

रानियां, 7 जुलाई (सतनाम): नामधारी सतगुरू ठाकुर दलीप सिंह ने हिंदुओं को संदेश देते हुए कहा हिन्दू धर्म सर्व प्राचीन है।

परंतु सर्व प्राचीन होते हुए भी हिन्दू धर्म अपनी जन्म भूमि भारत में ही समाप्त होता जा रहा है। हिन्दू धर्म की ऐसी दशा का कारण केवल हिन्दू आगुओं की संकीर्ण व नकारात्मक सोच है, जिन्होंने कभी अपने धर्म को प्रफुलित करने का सोचा ही नहीं। यदि कोई विदेशी धर्मों वाले हिन्दू धर्म में शामिल होना भी चाहते थे तो हिन्दू धर्म-आचार्यों ने उन्हें अपने धर्म में शामिल करने से मना कर दिया।

1320 ई. में लद्दाख के राजा रिनचिन को हिन्दू धर्म-आचार्य देवस्वामी ने दीक्षा देने से मना कर दिया। उसे पीर बुलबुल शाह ने मुसलमान बना लिया। राजा रिनचिन ने इस्लाम ग्रहण करते ही पूरा कश्मीर मुसलमान बना दिया।

कुछ समय उपरांत, कश्मीर के मुसलमानों ने महाराजा गुलाब सिंह की शरण में पुन: हिन्दू बनने की प्रार्थना की। उस समय के धर्म आचार्यों ने मुसलमान बन चुके हिंदुओं को वापस हिन्दू बनाने से इनकार कर दिया। ऐसी संकीर्ण नकारात्मक सोच कारण ही हिन्दू धर्म प्रफुलित होने की बजाय सिकुड़ गया है। हिन्दू भाइयो! आत्म-विश्लेषण कीजिए। भारत में धर्म परिवर्तन करके अपना धर्म फैलाने में ईसाइयों का कोई दोष नहीं है, दोष आपका है। आज ईसाइयों के 108 देश हैं और आप हिंदुओं का तो भारत भी अपना नहीं रहा। आप कहते हैं ईसाई छल-कपट, लालच, पाखंड व हिंसा करके धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। अपना धर्म प्रफुल्लित करने हेतु, ईसाई जो भी कार्य कर रहे हैं, धर्म प्रफुल्लित करने के तो वही ढंग हैं। ऐसे ढंगों से ही मानव जाति ने प्रगति की है तथा पृथ्वी पर राज कर रही है। आप ही विचार कीजिए, हिंसा, छल-कपट, लालच आदि किए बिना प्रगति कैसे हो सकती है। यदि हो सकती होती तो आप हिंदुओं ने प्रगति क्यों नहीं कर ली।

हिन्दू धर्म सर्व प्राचीन होते हुए भी अपनी नैतिकता और संकीर्ण सोच के कारण सिकुड़ता जा रहा है और ईसाई नैतिकता के बंधनों से मुक्त होकर अपनी प्रगतिशील सोच के कारण पूरे विश्व में छा गए हैं। हिन्दू भाइयो आप तो अपनी नैतिकता का छुनछुना लेकर भारत में ही समाप्त होते जा रहे हो। कृपया विचारवान बन कर ईसाईयों की गलती निकालनी बंद कीजिए। अपनी संकीर्ण सोच को विशाल सोच में परिवर्तित करके हिन्दू धर्म को प्रफुल्लित कीजिए। हम नामधारी सिख आपके साथ हैं।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

सभी राजनीतिक दल मिलकर अपने देश का नाम 'भारत' करने के प्रयत्न कीजिए।

(ठाकुर दलीप सिंह जी)

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने सभी राजनीतिक दलों से, विशेष रूप से, भाजपा-विरोधी राजनीतिक दलों से सनिम्र विनती करते हुए कहा "किसी भी भारतीय भाषा तथा प्राचीन ग्रंथों में हमारे देश का नाम 'इंडिया' नहीं है। पुरातन भारतीय साहित्य जैसे: ऋग्वेद, विष्णु पुराण आदि वेद-ग्रंथों में तथा भारतीय भाषाएं जैसे: संस्कृत, मलिआलम, तामिल आदि में: 'भारत', 'भारतम' या 'भारतवर्ष आदि, थोड़े-थोड़े अंतर से यही नाम हैं। भारतीय होने के कारण, आप 'भारत' नाम को स्वीकार कीजिए। भाजपा द्वारा, अपने देश का वास्तविक नाम: 'भारत' स्थापित करने के लिए जो प्रयत्न किए जा रहे हैं; कृपया आप इसमें भाजपा का पूर्ण रूप से खुलकर समर्थन कीजिए तथा इस शुभ कार्य को संपन्न करने में अग्रणीय होकर भाग लीजिए।

नामधारी मुखी ने सभी राजनीतिक दलों से संबोधित करते हुए कहा कि "यदि आप 'भारत' नाम का समर्थन करेंगे, तो उससे आपके वोट कम नहीं होंगे; बल्कि और भी अधिक मिलेंगे। ऐसा करने से, आपके 'I.N.D.I.A.' गठबंधन पर भी कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा; अपितु लाभ ही होगा। क्योंकि, लोगों के मन में 'इंडिया' नाम, जो सैंकड़े वर्षों से बैठा हुआ है, वह इतनी शीघ्रता से तो नहीं निकल पाएगा। आप ने जो अपना 'I.N.D.I.A.' गठबंधन बनाया है, आप उसका लाभ लेते रहें। आप सभी राजनीतिक दल, अपनी एक बहुत बड़ी पहचान तथा प्रभाव रखते हैं। भाजपा द्वारा, देश के संविधान तथा हर जगह अपने देश का नाम 'भारत' कर देने से, आपके प्रभाव में कोई अंतर नहीं आने वाला। परंतु, यदि

आप 'भारत' नाम की विरोधता करेंगे; तो उससे लोग आपके विरुद्ध हो जाएंगे। लोग यह समझेंगे कि "आप देश-प्रेमी नहीं: आप देश विरोधी हैं। क्योंकि आप गुलामी का कलंक-चिन्ह 'इंडिया' नाम रखना चाहते हैं"।

नामधारी मुखी ने सभी राजनीतिक दलों से पुनः विनती करते हुए कहा "अपने देश का पुरातन, वास्तविक नाम 'भारत' सदा के लिए स्थापित तथा प्रपक करने के शुभ कार्य को संपन्न करने के लिए, पूर्ण रूप से भाजपा की सहायता कीजिए। यह शुभ कार्य करके आप लोगों को बताइए कि "हम अच्छे कार्यों में अग्रणीय हैं, भाजपा द्वारा देश हित में किए जा रहे अच्छे कार्यों में उनसे सहमत हैं।" इस से आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी, कम नहीं होगी। वैसे भी, आप ने जो अपने गठबंधन का 'I.N.D.I.A.' नाम दिया है, उसका अर्थ 'भारत' देश तो है ही नहीं। फिर आपको किस बात की चिंता है? इस कारण, आपसे विनती है कि आप अपनी लोकप्रियता बढ़ाने व अधिक वोट अर्जित करने के लिए, प्रत्येक जगह पर 'भारत' नाम स्थापित करने व प्रत्येक जगह पर 'इंडिया' नाम को समाप्त करने में, भाजपा का पूर्ण रूप से सहयोग कीजिए"। जय भारत

सभी राजनीतिक दल अपने देश का नाम भारत करने का प्रयास करें: दलीप सिंह

रानियां, 7 सितम्बर (सतनाम): नामधारी ठाकुर दलीप सिंह ने सभी राजनीतिक दलों से, विशेष रूप से, भाजपा-विरोधी राजनीतिक दलों से नम्र विनती करते हुए कहा कि किसी भी भारतीय भाषा तथा प्राचीन ग्रंथों में हमारे देश का नाम इंडिया नहीं है। भारतम या भारत थोड़े-थोड़े अंतर से यही नाम है। भारतीय होने के कारण, आप भारत नाम को स्वीकार कीजिए।

भाजपा द्वारा अपने देश का वास्तविक नाम भारत स्थापित करने के लिए जो प्रयत्न किए जा रहे हैं। कृप्या आप इसमें भाजपा का पूर्ण रूप से खुलकर समर्थन कीजिए तथा इस शुभ कार्य को संपन्न करने में अग्रणीय होकर भाग लीजिए।

सभी राजनीतिक दलों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि आप भारत नाम का समर्थन करेंगे तो उससे आपके वोट कम नहीं होंगे, बल्कि और भी अधिक मिलेंगे।

ऐसा करने से, आपके इंडिया गठबंधन पर भी कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा, अपितु लाभ ही होगा। क्योंकि लोगों के मन में इंडिया नाम, जो सैंकड़ों वर्षों से बैठा हुआ है, वह इतनी शीघ्रता से तो नहीं निकल पाएगा। आप ने जो अपना इंडिया गठबंधन बनाया है, आप उसका लाभ लेते रहें।

भाजपा द्वारा देश के संविधान या कागजों में अपने देश का नाम भारत कर देने से, आपके प्रभाव में कोई अंतर नहीं आने वाला। परंतु यदि आप भारत नाम का विरोध करेंगे तो उससे लोग आपके विरुद्ध हो जाएंगे। लोग यह समझेंगे कि आप देश-प्रेमी नहीं, आप देश विरोधी हैं। क्योंकि आप गुलामी का कलंक-चिन्ह इंडिया नाम रखना चाहते हैं।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

सिक्ख कौन है? : गुरुवाणी अनुसार। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

"**सो सिखु, सखा, बंधपु है भाई: जि गुर के भाणे विचि आवै**" (पृष्ठ ६०१, म.३) सतगुरु अमर दास जी की वाणी के अनुसार, "सिख" वह है, जो गुरु का भाणा (वचन) मानता है। गुरु जी का वचन क्या है? "**हरि को नामु जपि निरमल करमु**" (पृष्ठ २६६, म.५) अर्थात: प्रभु का नाम जप और शुभ कर्म कर। जो भी मनुष्य, सतगुरु जी के इस वचन को मानता है और गुरु नानक देव जी के प्रति श्रद्धा रखता है; वह ही "सिख" (शिष्य/मुरीद) है। क्योंकि "सिखी" श्रद्धा से है, "**सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ**" (पृष्ठ ९८२, म.४)। सतगुरु नानक देव जी के प्रति श्रद्धा रखने वाला केवल मनुष्य ही नहीं, प्रत्येक प्राणी: **नानकपंथी-सिख (शिष्य/मुरीद)** है। जिस सर्प ने गुरु जी पर छाया की थी, वह भी "**सिख**" था।

"गुरद्वारा एक्ट" में लिखी हुई "सिख" की परिभाषा, केवल गुरद्वारा चुनाव के लिए है। परंतु, यह परिभाषा गुरुवाणी आशे के विरुद्ध है, जोकि अंग्रेजों ने सिख पंथ को घटाने के लिए बनाई थी। जो परिभाषा, यहाँ मैं लिख रहा हूँ, यह परिभाषा तो पूर्ण रूप से गुरुवाणी आधारित है।

सतगुरु नानक देव जी की वाणी में सिखी की व्याख्या यह है: "**सिखी सिखिआ गुर वीचारि**" (पृष्ठ ४६५) अर्थात: गुरु की शिक्षा को विचार कर मानना ही सिखी है। गुरुवाणी अनुसार, सिखी बाहरी स्वरूप से नहीं और किसी विशेष पहिरावे से भी नहीं। सतगुरु नानक देव जी ने तो वाणी में, हर वेश/भेख का खंडन किया गया है "**छोडहु वेसु भेख चतुराई**" (पृष्ठ ५९८)। सतगुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं '**वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी** "। अर्थात: किसी भी बाहरी स्वरूप से प्रभु-प्राप्ति नहीं हो सकती। प्रभु-प्राप्ति तो केवल उसी को होती है जो गुरु जी की शिक्षा को सुन कर मानता है।

संपूर्ण आदि, दशम व भाई गुरदास जी की वाणी में, कहीं भी सिख का बाहरी स्वरूप या वेश/पहिरावा निर्धारित नहीं किया गया। भाई गुरदास जी अनुसार: गुरू जी के पास संगत में आने वाले सिख तिलक लगाते थे "**मथै टिके लाल लाइ साधसंगति चलि जाइ बहंदे**"।

गुरु जी द्वारा, सिखों को किसी भी प्रकार के बाहरी स्वरूप (तिलक, जंझू, टोपी, सुन्नत, केश, दाढ़ी, दस्तार) और कोई भी विशेष पहिरावा पहनने का; गुरुवाणी में आदेश भी नहीं और मनाही भी नहीं की गई। कई सिख संप्रदायों का अपना-अपना बाहरी स्वरूप और भेख है (जैसे नामधारी सिंह सफेद वस्त्र पहनते हैं, निहंग सिंह नीले वस्त्र पहनते हैं, निर्मले महात्मा भगवा वस्त्र पहनते हैं), उन संप्रदायों को मानने वालों के लिए वह सभी स्वरूप ठीक हैं। लेकिन, **सिख** तो किसी भी बाहरी स्वरूप और भेख के बिना भी हो सकता है।

इस लिए, "**सिखी**" तो श्रद्धा से है; "**मेरे प्रभि, सरधा भगति मनि भावे**" (पृष्ठ ९८२, म.१)। प्रभु रूप गुरू को "श्रद्धा" वाली भक्ति ही अच्छी लगती है। इन पंक्तियों के अनुसार श्रद्धा रखने वाले **मोने (केस रहित)** भी "सिख" हैं। मोने लोगों को हम नहीं कह सकते "तुम सिख नहीं"। क्योंकि, बहुत से "हिंदू कहे जाते" मोने वीर; सतगुरु नानक देव जी को मानते हैं और कुछ तो गुरू जी पर हम से भी अधिक श्रद्धा रखते हैं। इसलिए, वह भी "सिख" हैं। सतगुरु नानक देव जी ने उच्चारण किया है "**ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति**" (पृष्ठ ९५२)। अर्थात: प्रभु प्राप्ति, ना तो केश रखने से होती है और ना ही केश कटवाने से होती है। सतगुरु गोबिंद सिंह जी ने "अकाल उस्तत" में लिखा है "**केस धरे न मिले हरि पिआरे**" अर्थात: केवल केश रख लेने से प्रभु प्राप्ति नहीं होती। गुरु ग्रंथ साहिब में तो यह भी लिखा है "**भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ**" (पृष्ठ १३६४)।

उपरोक्त पंक्तियों के अनुसार सिख बनने के लिए केश दाढ़ी होना ज़रूरी नहीं है: केश दाढ़ी के बिना भी सिख हो सकता है। इस लिए सिखी: केश दाढ़ी से नहीं है; सिखी तो गुरु के प्रति विश्वास के साथ है। क्योंकि गुरू जी उचारण करते हैं "जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति" (पृष्ठ २८२, म.५)। जिस के मन में गुरू जी पर प्रतीत होती है, प्रभु उसके ही मन में बसता है; बाहरले स्वरूप और केश दाढ़ी का कोई महत्व नहीं।

सतिगुरु गोबिन्द सिंह जी के आदेश अनुसार: अमृतधारी सिखों के लिए केश दाढ़ी रखना अनिवार्य है। लेकिन गुरू जी ने कभी यह वचन भी नहीं किया "जो अमृत नहीं छकता और केश दाढ़ी नहीं रखता; वह सिख ही नहीं है"। "अमृतधारी खालसा पंथ" तो समुच्चे सिख पंथ का एक "श्रेष्ठ-अंग" है। लेकिन समुच्चा सिख पंथ: केवल "अमृतधारी खालसा" ही नहीं; सिख पंथ तो सभी "नानक-पंथी" संप्रदाओं को मिला कर बनता है। अन्य सिख संप्रदाओं की तरह "अमृतधारी खालसा" भी एक संप्रदाय है। भाई घनैया, भाई नंदलाल, दीवान टोडर मल आदि सिख; दसवें

पातशाह जी के समय भी "अमृतधारी" नहीं थे: लेकिन वह भी महान "सिख" थे। राय बुलार, गनी खान, नबी खान, पीर बुद्धू शाह आदि भी सिख/मुरीद थे। आज भी जो प्राणी, गुरु जी प्रति श्रद्धा रखता है; वह ही **नानकपंथी-सिख (मुरीद)** है।

सिख पंथ "भक्ति-मार्ग" है। क्योंकि अपने शिष्यों को, गुरु जी ने भक्त बनाया है। इस कारण, भक्तों के जो लक्षण गुरु जी ने लिखे हैं, वह ही लक्षण सिक्खों में भी होने चाहिए। इन लक्षणों में गुरु जी ने किसी भी प्रकार के वस्त्र, केश-दाढ़ी आदि बाहरी स्वरूप का उल्लेख ही नहीं किया।

भगता की चाल निराली ॥

चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥

लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥

खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥

गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ (म.३, पृष्ठ ९१७)

उपरोक्त शब्द का संक्षिप्त अर्थ है कि सामान्य लोगों से भगतों/सिखों की जीवन शैली अलग होती है: बुरे कर्मों और तृष्णाओं का त्याग कर, गुरु-कृपा के साथ आपा-भाव (अहंकार) त्याग कर, प्रभु-भक्ति करनी। क्योंकि काम, क्रोध, तृष्णा आदि विकारों को छोड़ना अत्यंत कठिन है। इसी कारण, यह "भक्ति-मार्ग" खंडे की धार पर चलने जैसा कठिन है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुरुवाणी अनुसार: गुरु जी पर श्रद्धा रखने वाला भगत, बिना किसी भी बाहरी स्वरूप व पहिरावे के भी "सिख" है। क्योंकि सिखी श्रद्धा से है; बाहरी स्वरूप से नहीं।

संपर्क नंबर : राजपाल कौर:- 9023150008, रतनदीप सिंह:- 9650066108
ई-मेल : rajpal16773@gmail.com | ratandeeps5@gmail.com

सिक्ख कौन हैं? - गुरुवाणी अनुसार

सो सिखु, सखा, बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै। सतगुरु अमर दास जी की वाणी के अनुसार, सिख वह है, जो गुरु का भाणा (वचन) मानता है। गुरु जी का वचन क्या है? हरि को नामु जपि निरमल करमु अर्थात प्रभु का नाम जप और शुभ कर्म कर। जो भी मनुष्य, सतगुरु जी के इस वचन को मानता है और गुरु नानक देव जी के प्रति श्रद्धा रखता है; वह ही सिख (शिष्य/मुरीद) है। क्योंकि सिखी श्रद्धा से है, सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ। सतगुरु नानक देव जी के प्रति श्रद्धा रखने वाला केवल मनुष्य ही नहीं, प्रत्येक प्राणी - नानकपंथी-सिख (शिष्य/मुरीद) है। जिस गाय ने गुरु जी पर छाया की थी, वह भी सिख था। गुरद्वारा एक्ट में लिखी हुई सिख की परिभाषा, केवल गुरद्वारा चुनाव के लिए है। परंतु, यह परिभाषा गुरुवाणी आशे के विरुद्ध है, जोकि अंग्रेजों ने सिख पंथ को घटाने के लिए बनाई थी। जो परिभाषा, यहाँ मैं लिख रहा हूँ, यह परिभाषा तो पूर्ण रूप से गुरुवाणी आधारित है। सतगुरु नानक देव जी की वाणी में सिखी की व्याख्या यह है सिखी सिखिआ गुर वीचारि (पृष्ठ 465) अर्थात गुरु की शिक्षा को विचार कर मानना ही सिखी है। गुरुवाणी अनुसार, सिखी बाहरी स्वरूप से नहीं और किसी विशेष पहिरावे से भी नहीं। सतगुरु नानक देव जी ने तो वाणी में, हर वेश/भेख का खंडा किया गया है छोडहु बेमु भेख चतुराई (पृष्ठ 598)। सतगुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी । अर्थात किसी भी बाहरी स्वरूप में प्रभु-प्राप्ति नहीं हो सकती। प्रभु-प्राप्ति तो केवल उसी को होती है जो गुरु जी की शिक्षा को सुन कर मानता है।

संपूर्ण आदि, दशम व भाई गुरदास जी की वाणी में, कहीं भी सिख का बाहरी स्वरूप या वेश/पहिरावा निर्धारित नहीं किया गया। भाई गुरदास जी अनुसार गुरु जी के पास संगत में आने वाले सिख तिलक लगाते थे मथै टिके लाल लाइ साधसंगति चलि जाइ बहंदे।

ठाकुर दलीप सिंह जी

गुरु जी द्वारा, सिखों को किसी भी प्रकार के बाहरी स्वरूप (तिलक, जंञु, टोपी, सुन्नत, केश, दाढ़ी, दस्तार) और कोई भी विशेष पहिरावा पहनने का; गुरुवाणी में आदेश भी नहीं और मनाही भी नहीं की गई। कई सिख संप्रदायों का अपना-अपना बाहरी स्वरूप और भेख है (जैसे नामधारी सिंह सफेद वस्त्र पहनते हैं, निहंग सिंह नीले वस्त्र पहनते हैं, निर्मले महात्मा भगवा वस्त्र पहनते हैं), उन संप्रदायों को मानने वालों के लिए वह सभी स्वरूप ठीक हैं। लेकिन, सिख तो किसी भी बाहरी स्वरूप और भेख के बिना भी हो सकता है। इस लिए, सिखी तो श्रद्धा से है; मेरे प्रभि, सरधा भगति मनि भावै (पृष्ठ 982, म.1)। प्रभु रूप गुरु को श्रद्धा वाली भक्ति ही अच्छी लगती है। इन पंक्तियों के अनुसार श्रद्धा रखने वाले मोने (केस रहित) भी सिख हैं। मोने लोगों को हम नहीं कह सकते तुम सिख नहीं। क्योंकि, बहुत से हिंदू कहे जाते मोने वीर; सतगुरु नानक देव जी को मानते हैं और कुछ तो गुरु जी पर हम से भी अधिक श्रद्धा रखते हैं। इसलिए, वह भी सिख हैं। सतगुरु नानक देव जी ने उच्चारण किया है ना मति मूंडु मुडाई केसी ना सति (पृष्ठ 952)। अर्थात प्रभु प्राप्ति, ना तो केश रखने से होती है और ना ही केश कटवाने से होती है। सतगुरु गोबिंद सिंह जी ने अकाल उस्तत में लिखा है केस धरे न मिले हरि पिआरे अर्थात केवल केश रख लेने से प्रभु प्राप्ति नहीं होती। गुरु ग्रंथ साहिब में तो यह भी लिखा है भावै लांबे केस करु भावै घरि मुंडावहि (पृष्ठ 1365)। उपरोक्त पंक्तियों के अनुसार सिख बनने के लिए, केश दाढ़ी होना जरूरी नहीं है केश दाढ़ी के बिना भी सिख हो सकता है। इस लिए सिखों केश दाढ़ी से नहीं है; सिखी तो गुरु के प्रति विश्वास के साथ है। क्योंकि गुरु जी उच्चारण करते हैं जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति (पृष्ठ 282, म.5)। जिस के मन में गुरु जी पर प्रतीति होती है, प्रभु उसके ही मन में बसता है; बाहरले स्वरूप और केश दाढ़ी का कोई महत्व नहीं। सतिगुरु गोबिन्द सिंह जी के आदेश अनुसार अमृतधारी सिखों के लिए केश दाढ़ी रखना अनिवार्य है। लेकिन गुरु जी ने कभी यह वचन भी नहीं किया जो अमृत नहीं छकता और केश दाढ़ी नहीं रखता; वह सिख ही नहीं है। अमृतधारी खालसा पंथ तो समुच्चे सिख पंथ का एक श्रेष्ठ-अंग है। लेकिन समुच्चा सिख पंथ केवल अमृतधारी खालसा ही नहीं; सिख पंथ तो सभी नानक-पंथी संप्रदाओं को मिला कर बनता है। अन्य सिख संप्रदाओं की तरह अमृतधारी खालसा भी एक संप्रदाय है। भाई धनैया, भाई नंदलाल, दीवान टोडर मल आदि सिख; दसवें पातशाह जी के समय भी अमृतधारी नहीं थे लेकिन वह भी महान सिख थे। राय बुलार, गनी खान, नबी खान, पीर बुद्धू शाह आदि भी सिख/मुरीद थे। आज भी जो प्राणी, गुरु जी प्रति श्रद्धा रखता है; वह ही नानकपंथी-सिख (मुरीद) है।

सिख पंथ भक्ति-मार्ग है। क्योंकि आपने शिष्यों को, गुरु जी ने भक्त बनाया है। इस कारण, भक्तों के जो लक्षण गुरु जी ने लिखे हैं, वह ही लक्षण सिक्खों में भी होने चाहिए। इन लक्षणों में गुरु जी ने किसी भी प्रकार के वस्त्र, वेश-दाढ़ी आदि बाहरी स्वरूप का उल्लेख ही नहीं किया। भगता की चाल निराली ॥

चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥

तजि लोभु अहंकारु तजि बिसना बहुतु नाही बोलणा ॥

खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥

गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी । (म.3, पृष्ठ 918)

उपरोक्त शब्द का संक्षिप्त अर्थ है कि सामान्य लोगों से भगतों/सिखों की जीवन शैली अलग होती है। चुर कम और तृष्णाओं का त्याग कर, गुरु-कृपा के साथ आपा-भाव (अहंकार) त्याग कर, प्रभु-भक्ति करनी। क्योंकि काम, क्रोध, तृष्णा आदि विकारों को छोड़ना अत्यंत कठिन है। इसी कारण, यह भक्ति-मार्ग खंडे की धार पर चलने जैसा कठिन है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुरुवाणी अनुसार गुरु जी पर श्रद्धा रखने वाला भगत, सिख किसी भी बाहरी स्वरूप व पहिरावे के भी सिख है। क्योंकि सिखी श्रद्धा से है; बाहरी स्वरूप से नहीं।

संपर्क नंबर :
राजपाल कौर 9023150008 ,
रतनदीप सिंह 9650066108
ई-मेल : rajpal16773@gmail.com

ੴ सतिगुर प्रसादि।

तिलक लगाने वाले, केसरहित: भी सिख हो सकते हैं। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने कहा कि सिख पंथ को घटाने के लिए यह मिथ्या प्रचार किया जा रहा है कि तिलक लगाने वाले, केसरहित (मोने) सिख नहीं हो सकते। सच्चाई तो यह है कि तिलक लगाने वाले केसरहित (मोने) भी सिख हो सकते हैं; यदि वह सिख गुरू साहिबान पर श्रद्धा रखें। परन्तु, केसरहित लोग, अमृतधारी खालसा नहीं हो सकते; क्योंकि उन्होंने अमृत पान करके खालसाई मर्यादा नहीं अपनाई। "अमृतधारी खालसा पंथ" समुच्चे सिख पंथ का एक "श्रेष्ठ-अंग" है। लेकिन, समुच्चा सिख पंथ: केवल "अमृतधारी खालसा" ही नहीं; सिख पंथ तो सभी "गुरू नानक-पंथी" संप्रदाओं को मिला कर बनता है। अन्य सिख संप्रदाओं की तरह "अमृतधारी खालसा" भी एक सिख संप्रदाय ही है। "गुरद्वारा एक्ट" में लिखी हुई "सिख" की परिभाषा, केवल गुरद्वारा चुनाव के लिए है। परंतु, यह परिभाषा गुरुवाणी आशे के विरुद्ध है।

ठाकुर जी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए बताया कि गुरू साहिबान के समय में भी सिख तिलक लगाते थे एवं सतगुरु जी स्वयं भी कई बार तिलक लगाते थे। तिलक लगाने के बारे में गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है "**रामदास सोढ़ी तिलकु दीआ**"। भाई गुरदास जी अनुसार: गुरू जी के पास, संगत में बैठने वाले सिख तिलक लगाते थे "**मथै टिके लाल लाइ साधसंगति चलि जाइ बहंदे**"। इस कारण, तिलक लगाने से; कोई सिख से हिन्दू नहीं बन जाता और बिना तिलक लगाए भी लोग "हिन्दू" होते हैं।

जो सज्जन यह कहते हैं कि केसरहित (मोने) और/या तिलक लगाने वाले लोग "सिख" नहीं हैं; वह भोले हैं, या सिख विरोधी हैं। क्योंकि, गुरु ग्रन्थ साहिब में कहीं भी नहीं लिखा है कि केसरहित या तिलक लगाने वाला "सिख" नहीं हो सकता। सतगुरु नानक देव जी के प्रति श्रद्धा रखने वाला प्रत्येक प्राणी **सिख** है; भले ही वह मोना हो, या तिलक लगाता हो। जिस सर्प ने गुरु जी पर छाया की थी, वह भी "**सिख**" था। क्योंकि "सिखी" श्रद्धा से है, "**सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ**" (पृष्ठ ९९२, म.४)। संपूर्ण गुरुवाणी में, कहीं भी सिख का बाहरी स्वरूप और पहिरावा निर्धारित नहीं किया गया और न ही किसी चिह्न या वस्त्र को धारण करने की मनाही है। इस कारण, हर मोना हिंदू नहीं होता; हर केसाधारी सिख नहीं होता।

तिलक लगाने वाले, केसरहितः भी सिख हो सकते हैं
- नामधारी ठाकुर दलीप सिंह जी

कानपुर नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने कहा कि सिख पंथ को घटाने के लिए यह मिथ्या प्रचार किया जा रहा है कि तिलक लगाने वाले, केसरहित (मोने) सिख नहीं हो सकते। सच्चाई तो यह है कि तिलक लगाने वाले केसरहित (मोने) भी सिख हो सकते हैं; यदि वह सिख गुरू साहिबान पर श्रद्धा रखें। परन्तु, केसरहित लोग, अमृतधारी खालसा नहीं हो सकते; क्योंकि उन्होंने अमृत पान करके खालसाई मर्यादा नहीं अपनाई। अमृतधारी खालसा पंथ समुच्चे सिख पंथ का एक श्रेष्ठ-अंग है। लेकिन, समुच्चा सिख पंथ- केवल अमृतधारी खालसा ही नहीं; सिख पंथ तो सभी गुरू नानक-पंथी संप्रदाओं को मिला कर बनता है। अन्य सिख संप्रदाओं की तरह अमृतधारी खालसा भी एक सिख संप्रदाय ही है। गुरद्वारा एक्ट में लिखी हुई सिख की परिभाषा, केवल गुरद्वारा चुनाव के लिए है। परंतु, यह परिभाषा गुरुवाणी आशे के विरुद्ध है। ठाकुर जी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए बताया कि गुरू साहिबान के समय में भी सिख तिलक लगाते थे एवं सतगुरु जी स्वयं भी कई बार तिलक लगाते थे। तिलक लगाने के बारे में गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है रामदास सोढ़ी तिलकु दीआ। भाई गुरदास जी अनुसार- गुरू जी के पास, संगत में बैठने वाले सिख तिलक लगाते थे मथै टिके लाल लाइ साधसंगति चलि जाइ बहंदे। इस कारण, तिलक लगाने से; कोई सिख से हिन्दू नहीं बन जाता और बिना तिलक लगाए भी लोग हिन्दू होते हैं। जो सज्जन यह कहते हैं कि केसरहित (मोने) और/या तिलक लगाने वाले लोग सिख नहीं हैं; वह भोले हैं, या सिख विरोधी हैं।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

केसरहित (मोने) श्रद्धालुओं को भी: सिख प्रवान कीजिए। (ठाकुर दलीप सिंह

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने सिख पंथ को प्रफुलित करने हेतु अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि खालसा जी! हमें, केसरहित (मोने) श्रद्धालुओं को भी: सिख प्रवान करना चाहिए। जिससे, 'हिन्दू' कहलाये जाते सभी श्रद्धालु; खुद-ब-खुद सिख बन जाएंगे। क्योंकि, हर मोना हिंदू नहीं, हर केसधारी सिख नहीं। बहुत सारे केसरहित लोग, हमसे कहीं अधिक श्रद्धालु हैं। सिखी केश-दाढ़ी व बाहरी स्वरूप से नहीं; सिखी तो श्रद्धा से है "सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ" (म ४, पन्ना 982)। मोने लोगों को सिख मान लेने से, सिख पंथ की गिनती बढ़कर 50 करोड़ हो जाएगी। मोने (सहजधारी) सिखों और केसधारी सिखों का आपसी विरोध भी खत्म हो जाएगा।

ठाकुर दलीप सिंह जी ने सिख पंथ की चढ़दीकला के लिए अमृतधारी खालसा को याद दिलवाते हुए कहा कि अकाल तख्त साहिब समेत बड़े गुरुद्वारों पर कब्जा होने के कारण; "हम अमृतधारी खालसा" ने मोने लोगों को 'हिंदू' कहकर, अपने से दूर कर दिया है। वास्तव में तो वह "सिख" थे और अब भी हैं। इसलिए, अमृतधारी खालसा को यह याद रखने की आवश्यकता है कि प्रत्येक गुरु नानक नाम लेवा "सिख" है। गुरु जी ने हमें कोई ऐसा अधिकार नहीं दिया है कि हम किसी को कहें "तुम सिख नहीं हो"। हम अमृतधारी खालसे तो पूरे सिख पंथ का एक छोटा सा भाग है। सिख पंथ: केवल "अमृतधारी खालसा" नहीं, सिख पंथ तो बहुत विशाल है और यह सभी गुरु नानक नाम लेवा संप्रदाओं को मिलाकर बनता है। ब्रह्म ज्ञानी भाई घनैया, गुरु के महान प्रेमी भाई नंदलाल, छोटे साहिबजादों को चोरी दूध पिलाने वाला मोती राम मेहरा, साहिबजादों के अंतिम संस्कार के लिए मोहरें विछाकर जमीन खरीदने वाला दीवान टोडरमल आदि सिख; दसवें पातशाह जी के समय में भी "अमृतधारी" नहीं थे: लेकिन, वह भी महान सिख थे। दसवें गुरु जी ने कभी भी मोने लोगों को "यह सिख नहीं हैं" कहकर पंथ से निष्कासित नहीं किया और गुरु ग्रंथ साहिब में कहीं भी यह नहीं लिखा कि "केवल केसधारी लोग ही 'सिख' हो सकते हैं और मोने (केसरहित) 'सिख' नहीं हो सकते।" इसलिए, हर मोना हिंदू नहीं; हर केसधारी सिख नहीं।

केसरहित (मोने) श्रद्धालुओं को भी : सिख प्रवान कीजिए- ठाकुर दलीप सिंह जी

पेज 3 न्यूज़ / प्रि. राजपाल कौर

• जालंधर / 14 नवंबर

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने सिख पंथ को प्रफुलित करने हेतु अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि खालसा जी! हमें, केसरहित (मोने) श्रद्धालुओं को भीः सिख प्रवान करना चाहिए। जिससे, 'हिन्दू' कहलाये जाते सभी श्रद्धालु; खुद-ब-खुद सिख बन जाएंगे। क्योंकि, हर मोना हिंदू नहीं, हर केसधारी सिख नहीं। बहुत सारे केसरहित लोग, हमसे कहीं अधिक श्रद्धालु हैं। सिखी केश-दाढ़ी व बाहरी स्वरूप से नहीं; सिखी तो श्रद्धा से है सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ (म ४, पन्ना 982)। मोने लोगों को सिख मान लेने से, सिख पंथ की गिनती बढ़कर 50 करोड़ हो जाएगी। मोने (सहजधारी) सिखों और केसधारी सिखों का आपसी विरोध भी खत्म हो जाएगा।

ठाकुर दलीप सिंह जी ने सिख पंथ की

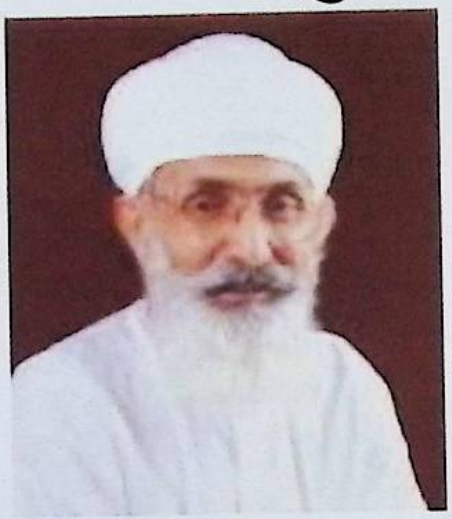

चढ़दीकला के लिए अमृतधारी खालसा को याद दिलवाते हुए कहा कि अकाल तख्त साहिब समेत बड़े गुरुद्वारों पर कब्जा होने के कारण; हम अमृतधारी खालसा ने मोने लोगों को 'हिंदू' कहकर, अपने से दूर कर दिया है। वास्तव में तो वह सिख थे और अब भी हैं। इसलिए, अमृतधारी खालसा को यह याद रखने की आवश्यकता है कि प्रत्येक गुरु नानक नाम लेवा सिख है। गुरु जी ने हमें कोई ऐसा अधिकार नहीं दिया है कि हम किसी को कहें तुम सिख नहीं हो। हम अमृतधारी खालसे तो पूरे सिख पंथ का एक छोटा सा भाग है। सिख पंथः केवल अमृतधारी खालसा नहीं, सिख पंथ तो बहुत विशाल है और यह सभी गुरु नानक नाम लेवा संप्रदाओं को मिलाकर बनता है। ब्रह्म ज्ञानी भाई घनैया, गुरु के महान प्रेमी भाई नंदलाल, छोटे साहिबजादों को चोरी दूध पिलाने वाला मोती राम मेहरा, साहिबजादों के अंतिम संस्कार के लिए मोहरें विछाकर जमीन खरीदने वाला दीवान टोडरमल आदि सिख; दसवें पातशाह जी के समय में भी अमृतधारी नहीं थेः लेकिन, वह भी महान सिख थे। दसवें गुरु जी ने कभी भी मोने लोगों को यह सिख नहीं हैं कहकर पंथ से निष्कासित नहीं किया और गुरु ग्रंथ साहिब में कहीं भी यह नहीं लिखा कि केवल केसधारी लोग ही 'सिख' हो सकते हैं और मोने (केसरहित) 'सिख' नहीं हो सकते। इसलिए, हर मोना हिंदू नहीं; हर केसधारी सिख नहीं।

स्काई वन ने लीबियाई

दिल्ली के मख्य सचिव पर अपने बेटे

ੴ सतिगुर प्रसादि।

हर सिख 'खालसा' नहीं: हर अमृतधारी-खालसा 'सिख' है।

(ठाकुर दलीप सिंह जी)

हमें अमृतधारी-खालसा तथा सिख पंथ को भिन्न भिन्न करके समझने की आवश्यकता है। क्योंकि, प्रत्येक सिख: अमृतधारी-खालसा नहीं है। अमृतधारी-खालसा: सिख पंथ की एक श्रेष्ठ संप्रदाय है, जो दसवें गुरु, सतिगुरू गोबिन्द सिंह जी ने बनाई थी। खालसा बनने के लिए, सिख को अमृत पान करके एक विशेष प्रकार की खालसाई मर्यादा धारण करनी पड़ती है। जो मनुष्य, अमृत पान करके, विशेष खालसाई मर्यादा धारण करता है: वही "खालसा" है। परंतु, "सिख" तो कोई भी गुरु जी का श्रद्धालु हो सकता है। सतगुरु नानक देव जी पर श्रद्धा रखने वाला प्रत्येक प्राणी 'सिख' है। जिसके लिए गुरु जी ने उच्चारण किया है 'सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ' (म ४, पन्ना 982)। इस प्रकार, सिखी तो श्रद्धा से है; केवल अमृत पान करके विशेष खालसाई मर्यादा से नहीं।

अमृतपान, केस दाढ़ी तथा खालसाई मर्यादा धारण किए बिना भी; सतगुरु नानक देव जी का जो भी कोई श्रद्धालु हो: वह सिख (शिष्य/मुरीद) है। केवल अमृतधारी-खालसा ही पूरा सिख पंथ नहीं। भाई घनैया, भाई नंदलाल, दीवान टोडर मल आदि सिख; दसवें पातशाह जी के समय भी "अमृतधारी" नहीं थे: लेकिन वह भी महान "सिख" थे। राय बुलार, गनी खान, नबी खान, पीर बुद्धू शाह आदि भी सिख थे। आज भी जो हिन्दू, मुस्लमान, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि गुरु जी पर श्रद्धा रखते हैं, वह सभी "**नानकपंथी-सिख**" (शिष्य/मुरीद) हैं।

सिख पंथ बहुत विशाल है, जिसमें सभी गुरु नानक नाम लेवा संप्रदाय आती हैँ। जैसे: निर्मले, उदासी, सेवा पंथी, सिन्धी इत्यादि; जो अमृतधारी नहीं है। "भगत पंथी" जैसी सिख पंथ में अनेक संप्रदाय हैं, जिनका नाम ही लोगों ने कभी नहीं सुना। केवल विशेष बाहरी स्वरूप वाले अमृतधारी खालसे को ही पूरा सिख पंथ समझना व कहना: एक बहुत बड़ी भूल है।

गुरुद्वारा एक्ट बन कर, अकाल तख्त साहिब, हरिमंदिर साहिब, ननकाणा साहिब आदि गुरुद्वारों पर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का कब्जा होने के कारण: केवल अमृतधारी-खालसे को ही, समुच्चे सिख पंथ के रूप में पेश करके प्रचार दिया गया है। जिस कारण, लोगों ने भी यह समझ लिया कि केवल केस दाढ़ी वाला अमृतधारी-खालसा ही "सिख" है, जो कि सत्य नहीं है।

"गुरद्वारा एक्ट" में लिखी हुई "सिख" की परिभाषा, गुरुवाणी आशे के विरुद्ध है, जो कि अंग्रेजों ने सिख पंथ को घटाने के लिए बनाई थी। और, यह परिभाषा केवल गुरद्वारा चुनाव के लिए है। जब कि, गुरुद्वारा चुनाव तो सिख पंथ में होने ही नहीं चाहिए। जो सिख की परिभाषा; यहाँ लिखी है, वह परिभाषा तो पूर्ण रूप से गुरुवाणी आधारित है।

इस प्रकार, खालसा तथा सिख में एक बहुत बड़ा अंतर है: वैसे कोई भी अंतर नहीं है। खालसा पंथ 'सिख पंथ' है: परंतु, सिख पंथ; केवल 'खालसा पंथ' नहीं। सिख पंथ तो सभी गुरु नानक नाम लेवा को मिलाकर बनता है।

हर सिख 'खालसा' नहीं, हर अमृतधारी-खालसा 'सिख'

जन एक्सप्रेस। कानपुर

हमें अमृतधारी-खालसा तथा सिख पंथ को भिन्न भिन्न करके समझने की आवश्यकता है। क्योंकि, प्रत्येक सिख अमृतधारी-खालसा नहीं है। अमृतधारी-खालसा सिख पंथ की एक श्रेष्ठ संप्रदाय है, जो दसवें गुरु, सतिगुरू गोविन्द सिंह जी ने बनाई थी। खालसा बनने के लिए, सिख को अमृत पान करके एक विशेष प्रकार की खालसाई मर्यादा धारण करनी पड़ती है। जो मनुष्य, अमृत पान करके, विशेष खालसाई मर्यादा धारण करता है। वही 'खालसा' है। परंतु, 'सिख' तो कोई भी गुरु जी का श्रद्धालु हो सकता है। सतगुरु नानक देव जी पर श्रद्धा रखने वाला प्रत्येक प्राणी 'सिख' है। जिसके लिए गुरु जी ने उच्चारण किया है 'सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ' (म 4, पन्ना 982)। इस प्रकार, सिखी तो श्रद्धा से है; केवल अमृत पान करके विशेष खालसाई मर्यादा से नहीं। अमृतपान, केस दाढ़ी तथा खालसाई मर्यादा धारण किए विना भी सतगुरु नानक देव जी का जो भी कोई श्रद्धालु हो, वह सिख (शिष्य/ मुरीद) है। केवल अमृतधारी-खालसा ही पूरा सिख पंथ नहीं। भाई घनैया, भाई नंदलाल, दीवान टोडर मल आदि सिख; दसवें पातशाह जी के समय भी अमृतधारी नहीं थे लेकिन वह भी महान सिख थे। राय बुलार, गनी खान, नवी खान, पीर बुद्धू शाह आदि भी सिख थे। आज भी जो हिन्दू, मुस्लमान, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि गुरु जी पर श्रद्धा रखते हैं, वह सभी 'नानकपंथी-सिख' (शिष्य/मुरीद) हैं। सिख पंथ वहुत विशाल है, जिसमें सभी गुरु नानक नाम लेवा संप्रदाय आती हैं। जैसे, निर्मले, उदासी, सेवा पंथी, सिन्धी इत्यादि; जो अमृतधारी नहीं है। भगत पंथी जैसी सिख पंथ में अनेक संप्रदाय हैं, जिनका नाम ही लोगों ने कभी नहीं सुना। केवल विशेष बाहरी स्वरूप वाले अमृतधारी खालसे को ही पूरा सिख पंथ समझना व कहना एक वहुत वड़ी भूल है। गुरुद्वारा एक्ट वन कर, अकाल तख्त साहिव, हरिमंदिर साहिव, ननकाणा साहिव आदि गुरुद्वारों पर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का कब्जा होने के कारण केवल अमृतधारी-खालसे को ही, समुच्चे सिख पंथ के रूप में पेश करके प्रचार दिया गया है। जिस कारण, लोगों ने भी यह समझ लिया कि केवल केस दाढ़ी वाला अमृतधारी-खालसा ही सिख है, जो कि सत्य नहीं है। गुरद्वारा एक्ट में लिखी हुई सिख की परिभाषा, गुरुवाणी आशे के विरुद्ध है, जो कि अंग्रेजों ने सिख पंथ को घटाने के लिए वनाई थी। और, यह परिभाषा केवल गुरद्वारा चुनाव के लिए है। जव कि, गुरुद्वारा चुनाव तो सिख पंथ में होने ही नहीं चाहिए। जो सिख की परिभाषा; यहाँ लिखी है, वह परिभाषा तो पूर्ण रूप से गुरुवाणी आधारित है। इस प्रकार, खालसा तथा सिख में एक वहुत वड़ा अंतर है वैसे कोई भी अंतर नहीं है। खालसा पंथ 'सिख पंथ' है परंतु, सिख पंथ; केवल 'खालसा पंथ' नहीं। सिख पंथ तो सभी गुरु नानक नाम लेवा को मिलाकर वनता है।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

"सिख" बनने के लिए अमृतपान करना व केश रखने जरूरी नहीं; श्रद्धा जरूरी है। परंतु, 'अमृतधारी खालसा' बनने के लिए जरूरी है। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

"सिख" बनने के लिए: अमृतपान करना व केसाधारी होना आवश्यक नहीं; केवल "श्रद्धा" चाहिए। यह विचार व्यक्त करते हुए नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने कहा कि सतगुरु गोबिंद सिंह जी के समय भी कई मोने श्रद्धालु, बिना अमृतपान किये "सिख" थे और आज भी "सिख" हैं। इस तरह, सिखों की गिनती दो करोड़ नहीं, पचास करोड़ है। उन्होंने कहा कि दशमेश जी के समय भाई घनैया, भाई नंद लाल, दीवान टोडर मल्ल, मोतीलाल मेहरा, नबी खान, गनी खान आदि अमृतपान किये बिना भी महान "सिख" थे और कई नए श्रद्धालु भी, बिना अमृतपान किये उस समय "सिख" बनते थे। यदि उस समय, बिना अमृतपान किए, केस-रहित महान "सिख" थे; तो आज अमृत-रहित मोने श्रद्धालु "सिख" क्यों नहीं हैं तथा नए श्रद्धालु: बिना अमृतपान किये 'सिख' क्यों नहीं बन सकते?

नामधारी मुखी ने आगे कहा कि दशमेश जी ने अपनी रसना से कभी ऐसा नहीं कहा "जो अमृतपान न करे, केश-दाढ़ी न रखे; वह सिख नहीं है"। गुरु जी ने अपनी वाणी में स्पष्ट लिखा है "केस धरे न मिले हरि प्यारे"। आदि गुरु ग्रंथ साहिब तथा दशम गुरु ग्रंथ साहिब में कहीं भी नहीं लिखा "अमृतपान किए बिना तथा केस रखे बिना: कोई "सिख" नहीं हो सकता"। तो फिर हम अमृतधारी खालसा, इस भ्रम में क्यों पड़ गये हैं कि केवल केश रखने वाले व अमृतधारी ही "सिख" हो सकते हैं?

"अमृतधारी खालसा" से सनिम्र विनती करते हुए उन्होंने कहा कि जब सतगुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने समय भी, अपने सभी श्रद्धालुओं को अमृतपान करके, केसाधारी खालसा बनने के लिए मजबूर नहीं किया; तो हम क्यों सब को अमृतपान करके, केसाधारी खालसा बनने के लिए मजबूर कर रहे हैं? हम ऐसा क्यों कह रहे हैं कि "सिख" बनने के लिए, अमृतपान करना व केसाधारी बनना अत्यंत आवश्यक है? सिख बनने के लिए तो केवल "श्रद्धा" चाहिए "सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ"।

उन्होंने कहा कि अमृतधारी खालसिओं को अपनी संकीर्ण कट्टर सोच छोड़कर, विशाल सोच अपना लेनी चाहिए तथा अन्य प्राणियों को अपने साथ जोड़ने के लिए: अमृत-रहित व केश-रहित (मोने) श्रद्धाओं को भी "सिख" प्रवान कर लेना चाहिए; जो कि सतिगुरु नानक देव जी की सिखी में प्रवानित है। विचार करने की आवश्यकता है: चलती गोलियों में सतगुरु गोबिंद सिंह जी को उठा कर लिजाने वाले गनी खान, नबी खान, साहिबजादों को दूध पिलाने वाले मोतीलाल मेहरा और हरमंदिर साहिब में करोड़ों रुपये के फूलों से सेवा करने वाले के. के. शर्मा आदि; सिख क्यों नहीं हैं? गुरु जी ने गुरु ग्रंथ साहिब में वचन मानने वाले प्रत्येक श्रद्धालु को "सिख" प्रवान किया है "सो सिखु, सखा, बंधपु है भाई: जो गुर के भाणे विचि आवै" (म.3)। तो फिर, "अमृत रहित व केश रहित (मोने) "सिख" नहीं" का प्रमाण-पत्र, हम किसी को कैसे दे सकते हैं?

ठाकुर दलीप सिंह जी ने स्पष्ट किया कि "अमृतधारी-केसाधारी" खालसा तो सतगुरु जी ने केवल एक विशेष कार्य के लिए बनाया था, जो "गुरु नानक नाम लेवा" सिख पंथ की एक श्रेष्ठ संप्रदाय है। इस लिए, सभी अमृतधारियों को अपनी संकीर्ण सोच त्यागकर तथा विशाल सोच अपना कर: सभी "गुरु नानक नाम लेवा" को हर विश्वास और हर स्वरूप से "सिख" प्रवान कर लेना चाहिए, ता कि हर जगह सतगुरु नानक देव जी की जय जय कार हो सके।

महानगरकी की तिथि घटना और गहरा विषय। पहली घना लिए टाम लगा दा गइ ह।

सिख बनने के लिए अमृतपान करना व केश रखने जरूरी नहीं श्रद्धा जरूरी है परंतु, अमृतधारी खालसा बनने के लिए जरूरी हैः ठाकुर दलीप सिंह

कानपुर सिख बनने के लिए- अमृतपान करना व केसाधारी होना आवश्यक नहीं; केवल श्रद्धा चाहिए। यह विचार व्यक्त करते हुए नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह ने कहा कि सतगुरु गोबिंद सिंह के समय भी कई मोने श्रद्धालु, बिना अमृतपान किये सिख थे और आज भी सिख हैं। इस तरह, सिखों की गिनती दो करोड़ नहीं, पचास करोड़ है। उन्होंने कहा कि दशमेश जी के समय भाई घनैया, भाई नंद लाल, दीवान टोडर मल्ल, मोतीलाल मेहरा, नबी खान, गनी खान आदि अमृतपान किये बिना भी महान सिख थे और कई नए श्रद्धालु भी, बिना अमृतपान किये उस समय सिख बनते

थे। यदि उस समय, बिना अमृतपान किए, केस-रहित महान सिख थे; तो आज अमृत-रहित मोने श्रद्धालु सिख क्यों नहीं हैं तथा नए श्रद्धालु- बिना अमृतपान किये %सिख% क्यों नहीं बन सकते ?नामधारी मुखी ने आगे कहा कि दशमेश जी ने अपनी रसना से कभी ऐसा नहीं कहा जो अमृतपान न करे, केश-दाढ़ी न रखे; वह सिख नहीं है। गुरु जी ने अपनी वाणी में स्पष्ट लिखा है केस धरे न मिले हरि प्यारे। आदि गुरु ग्रंथ साहिब तथा दशम गुरु ग्रंथ साहिब में कहीं भी नहीं लिखा फअमृतपान किए बिना तथा केस रखे बिना- कोई सिख नहीं हो सकता। तो फिर हम अमृतधारी खालसा, इस भ्रम में क्यों पड़ गये हैं कि केवल केश रखने वाले व अमृतधारी ही सिख हो सकते हैं?

अमृतधारी खालसा से सनिम्र विनती करते हुए उन्होंने कहा कि जब सतगुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने समय भी, अपने सभी श्रद्धालुओं को अमृतपान करके, केसाधारी खालसा बनने के लिए मजबूर नहीं किया; तो हम क्यों सब को अमृतपान करके, केसाधारी खालसा बनने के लिए मजबूर कर रहे हैं? हम ऐसा क्यों कह रहे हैं कि फसिखफ बनने के लिए, अमृतपान करना व केसाधारी बनना अत्यंत आवश्यक है? सिख बनने के लिए तो केवल श्रद्धा चाहिए सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ उन्होंने कहा कि अमृतधारी खालसिओं को अपनी संकीर्ण कट्टर सोच छोड़कर, विशाल सोच अपना लेनी चाहिए तथा अन्य प्राणियों को अपने साथ जोड़ने के लिए- अमृत-रहित व केश-रहित (मोने) श्रद्धाओं को भी सिख प्रवान कर लेना चाहिए; जो कि सतिगुरु नानक देव जी की सिखी में प्रवानित है। विचार करने की आवश्यकता है- चलती गोलियों में सतगुरु गोबिंद सिंह जी को उठा कर लिजाने वाले गनी खान, नबी खान, साहिबजादों को दूध पिलाने वाले मोतीलाल मेहरा और हरमंदिर साहिब में करोड़ों रुपये के फूलों से सेवा करने वाले के. के. शर्मा आदि; सिख क्यों नहीं हैं? गुरु जी ने गुरु ग्रंथ साहिब में वचन मानने वाले प्रत्येक श्रद्धालु को सिख प्रवान किया है सो सिखु, सखा, बंधपु है भाई- जो गुर के भाणे विचि आवै (म.3)। तो फिर, अमृत रहित व केश रहित (मोने) सिख नहीं का प्रमाणपत्र, हम किसी को कैसे दे सकते हैं ?ठाकुर दलीप सिंह ने स्पष्ट किया कि अमृतधारी-केसाधारी खालसा तो सतगुरु जी ने केवल एक विशेष कार्य के लिए बनाया था, जो गुरु नानक नाम लेवा सिख पंथ की एक श्रेष्ठ संप्रदाय है। इस लिए, सभी अमृतधारियों को अपनी संकीर्ण सोच त्यागकर तथा विशाल सोच अपना कर- सभी गुरु नानक नाम लेवा को हर विश्वास और हर स्वरूप से सिख प्रवान कर लेना चाहिए, ता कि हर जगह सतगुरु नानक देव जी की जय जय कार हो सके।

लोक जन संदेश20/10/23

ੴ सतिगुर प्रसादि।

खालिस्तान बनेगा या ईसाईस्तान? पंजाब में। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

वर्तमान परिस्थितियों में खालिस्तान संबंधी अपने विचार व्यक्त करते हुए नामधारी ठाकुर दलीप सिंह जी ने कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो जी के बयान के कारण खालिस्तान का मुद्दा इस समय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में है। पंजाब में खालिस्तान बनाने की मांग करने वाले खालसा जी! पंजाब तो ईसाईस्तान बनता जा रहा है। यदि सिखी प्रचार को बढ़ाकर, ईसाईअत को रोका नहीं गया; तो 2047 तक वर्तमान पंजाब पूर्ण रूप से 'ईसाई' बन जाएगा। इस समय पंजाब में हजारों की गिनती में गिर्जा (चर्च) बन चुके हैं। ईसाइयों की अधिक गिनती होने के कारण, उन्होंने पंजाब में अपना एक राजनीतिक दल 'यूनाइटेड पंजाब पार्टी' भी बना लिया है। पाकिस्तान की सीमा से लगे गुरदासपुर जैसे कई जिले तो पूर्ण रूप से ईसाई बन चले हैं। क्या फिर आप, ईसाई बहु-गिनती वाले क्षेत्र को 'खालिस्तान' कहेंगे? पंजाब में ईसाइयों के बड़े समागम में जितनी गिनती होती है, खालसा जी के पाँच बड़े समागमों को मिलाकर भी उतनी बड़ी गिनती कभी नहीं होती।

आज, पंजाब का बहुत बड़ा भाग ईसाई हो चुका है और पंजाब में ईसाईयत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। खालसा जी के मुख्य अस्थान श्री अकाल तख्त साहिब, हरिमंदिर साहिब तथा शिरोमणि कमेटी के मुख्य अस्थान वाले पवित्र शहर: श्री अमृतसर साहिब में भी इसाइयत छा चुकी है तथा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यदि इसी तीव्र गति से खालसे, ईसाई बनते रहे; तो कुछ समय तक, पंजाब में खालसा तो गोता लगाकर ढूँढने पर भी नहीं मिलेंगे। ईसाई बनने वाले सभी लोग: कभी खालसे थे; जो अब ईसाई बन चुके हैं। क्योंकि, हम खालसा ने, उन ईसाई बनने वाले अपने लोगों को संभाला नहीं और न ही खालसा पंथ का प्रचार किया। जितनी शक्ति व पैसा: हम खालसा ने, खालिस्तान बनाने के आंदोलन में निवेश किया है; यदि कहीं उतनी शक्ति व पैसा, 'खालसे' के प्रचार-प्रसार में लगाया गया होता; तो वह लोग ईसाई बनते ही न। या,

ईसाई बन चुके लोग भी, आज तक वापिस 'खालसे' बन चुके होते। खालिस्तान की मांग को लेकर, जो 25000 के करीब कीमती जीवन गए, वह भी न जाते।

ठाकुर दलीप सिंह जी ने टिप्पणी करते हुए कहा कि खालसा पंथ के आगू, खालिस्तान के बड़े आगू और खालसा पंथ की सभी बड़ी संस्थाएं: कभी भी ईसाइयों का विरोध नहीं करते। परन्तु, जिस भारत देश में, सिख गुरु साहिबान तथा खालसा पंथ प्रगट हुए; उस भारत देश का विरोध अवश्य करते हैं। यहाँ तक कि, जिन हिन्दू परिवारों में हमारे गुरु जी प्रगट हुए तथा जिन हिन्दुओं में से खालसा पंथ बना; उन हिंदुओं का सदैव विरोध ही करते हैं। खालिस्तान की लहर चलाकर, भारत सरकार से टक्कर लेने की बात तो अवश्य करते हैं; परंतु, पाकिस्तान से टक्कर लेकर, उनसे ननकाना साहिब आदि क्षेत्र लेने की बात नहीं करते। यही खालसे वीर, ईसाइयत को रोकने और सिख पंथ का प्रचार बढ़ाने के लिए भी कुछ नहीं करते हैं। यदि खालसे ने अपना प्रचार बढ़िया ढंग से किया होता; तो पंजाब में ईसाईयत प्रवेश कर ही नहीं सकती थी।

पंजाब के लोगों को पुनः खालसा बनाने के लिए सुझाव देते हुए ठाकुर जी ने कहा "खालसा जी! खालिस्तान बनाने से पहले, पंजाब को ईसाईस्तान बनने से रोकिए। पंजाब के सभी लोगों को पहले 'खालसे' बनाओ। खालसे का इसाइयत में धर्म परिवर्तन रोकने के लिए, ईसाइयों का विरोध करने की बजाय; सिखी का प्रचार पूरी तीव्रता से, ईसाइयों की तरह बढ़िया ढंग अपनाकर ही होना चाहिए। क्योंकि, विरोध करने से हिंसा तथा घृणा फैलती है। पंथ घृणा से नहीं; प्रेम, प्रचार तथा सेवा से बढ़ेगा। प्रचार तथा प्रेम से ही, लोगों को पुनः खालसा बनाया जा सकता है"।

ठाकुर जी ने यह भी कहा कि भारत से, खालिस्तान के लिए जमीन का एक टुकड़ा निकालने से पहले खालिस्तानी वीरों को; खालिस्तान बनाने के लिए पाकिस्तान में से ननकाना साहिब, पंजा साहिब आदि क्षेत्र भी ले लेने चाहिए। ताकि, खालसे के सभी मुख्य गुरुद्वारे खालिस्तान में आ सकें।

वर्तमान परिस्थिति को देखते हुये पंजाब मे खालिस्तान बनेगा या ईसाईस्तान-ठाकुर दलीप सिंह जी

स्वतंत्र भारत संवाददाता
कानपुर । वर्तमान परिस्थितियों में खालिस्तान संबंधी अपने विचार व्यक्त करते हुए नामधारी ठाकुर दलीप सिंह जी ने कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो जी के बयान के कारण खालिस्तान का मुद्दा इस समय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में है। पंजाब में खालिस्तान बनाने की मांग करने वाले खालसा जी! पंजाब तो ईसाईस्तान बनता जा रहा है। यदि सिखी प्रचार को बढ़ाकर ईसाईअत को रोका नहीं गया तो 247 तक वर्तमान पंजाब पूर्ण रूप से ईसाई बन जाएगा।

इस समय पंजाब में हजारों की गिनती में गिर्जा चर्च बन चुके हैं। ईसाइयों की अधिक गिनती होने के कारण उन्होंने पंजाब में अपना एक राजनीतिक दल यूनाइटेड पंजाब पार्टी भी बना लिया है। पाकिस्तान की सीमा से लगे गुरदासपुर जैसे कई जिले तो पूर्ण रूप से ईसाई बन चले हैं। क्या फिर आपए ईसाई बहु.गिनती वाले क्षेत्र को खालिस्तान कहेंगे पंजाब में ईसाइयों के बड़े समागम में जितनी गिनती होती है खालसा जी के पाँच बड़े समागमों को मिलाकर भी उतनी बड़ी गिनती कभी नहीं होती आज पंजाब का बहुत बड़ा भाग ईसाई हो चुका है और पंजाब में ईसाईयत दिन.प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। खालसा जी के मुख्य अस्थान श्री अकाल तख्त साहिब हरिमंदिर साहिब तथा शिरोमणि कमेटी के मुख्य अस्थान वाले पवित्र शहररू श्री अमृतसर साहिब में भी इसाइयत छा चुकी है तथा दिन.प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यदि इसी तीव्र गति से खालसे ईसाई बनते रहे तो कुछ समय तकए पंजाब में खालसा तो गोता लगाकर ढूँढने पर भी नहीं मिलेंगे।

ईसाई बनने वाले सभी लोगरू कभी खालसे थेय जो अब ईसाई बन चुके हैं। क्योंकिए हम खालसा नेए उन ईसाई बनने वाले अपने लोगों को संभाला नहीं और न ही खालसा पंथ का प्रचार किया। जितनी शक्ति व पैसारू हम खालसा नेए खालिस्तान बनाने के आंदोलन में निवेश किया हैय यदि कहीं उतनी शक्ति व पैसा खालसे के प्रचार.प्रसार

में लगाया गया होता तो वह लोग ईसाई बनते ही न। याए ईसाई बन चुके लोग भीए आज तक वापिस खालसे बन चुके होते। खालिस्तान की मांग को लेकर जो 25 के करीब कीमती जीवन गएए वह भी न जाते ठाकुर दलीप सिंह जी ने टिप्पणी करते हुए कहा कि खालसा पंथ के आगू खालिस्तान के बड़े आगू और खालसा पंथ की सभी बड़ी संस्थाएं कभी भी ईसाइयों का विरोध नहीं करते। परन्तु जिस भारत देश में सिख गुरु साहिबान तथा खालसा पंथ प्रगट हुए उस भारत देश का विरोध अवश्य करते हैं। यहाँ तक किए जिन हिन्दू परिवारों में हमारे गुरु जी प्रगट हुए तथा जिन हिन्दुओं में से खालसा पंथ बना।

उन हिंदुओं का सदैव विरोध ही करते हैं। खालिस्तान की लहर चलाकर भारत सरकार से टक्कर लेने की बात तो अवश्य करते हैंय परंतु पाकिस्तान से टक्कर लेकरए उनसे ननकाना साहिब आदि क्षेत्र लेने की बात नहीं करते। यही खालसे वीर ईसाइयत को रोकने और सिख पंथ का प्रचार बढ़ने के लिए भी कुछ नहीं करते हैं।

यदि खालसे ने अपना प्रचार बढ़िया ढंग से किया होताय तो पंजाब में ईसाईयत प्रवेश कर ही नहीं सकती थी पंजाब के लोगों को पुनः खालसा बनाने के लिए सुझाव देते हुए ठाकुर जी ने कहा खालसा जी खालिस्तान बनाने से पहलेए पंजाब को ईसाईस्तान बनने से रोकिए पंजाब के सभी लोगों को पहले खालसे बनाओ खालसे का इसाइयत में धर्म परिवर्तन रोकने के लिए ईसाइयों का विरोध करने की बजाय सिखी का प्रचार पूरी तीव्रता से ईसाइयों की तरह बढ़िया ढंग अपनाकर ही होना चाहिए क्योंकि विरोध करने से हिंसा तथा घृणा फैलती है पंथ घृणा से नहींय प्रेम प्रचार तथा सेवा से बढ़ेगा।

प्रचार तथा प्रेम से ही लोगों को पुनः खालसा बनाया जा सकता है ठाकुर जी ने यह भी कहा कि भारत से खालिस्तान के लिए जमीन का एक टुकड़ा निकालने से पहले खालिस्तानी वीरों को खालिस्तान बनाने के लिए पाकिस्तान में से ननकाना साहिब पंजा साहिब आदि क्षेत्र भी ले लेने चाहिए। ताकि खालसे के सभी मुख्य गुरुद्वारे खालिस्तान में आ सकें।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

क्या खालिस्तान से निकलेगा ईसाईस्तान? (ठाकुर दलीप सिंह जी)

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने खालिस्तान बारे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाब में खालिस्तान बनाने की लहर चलाने वाले सतिकारयोग खालसा जी! यदि किसी प्रकार से पंजाब में खालिस्तान बन ही जाता है; तो कुछ समय के उपरांत, पंजाब में रहने वाले ईसाई भी अपने लिए, धर्म-आधारित एक अलग देश की मांग करेंगे। जब ईसाई अपने लिए एक अलग ईसाईस्तान देश की मांग उठायेंगे; तो क्या आप प्रसन्नतापूर्वक शांति से, अपने खालिस्तान से एक टुकड़ा ईसाईस्तान का काटकर, उन्हें दे देंगे? यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि शायद आपको इस तथ्य का ध्यान ही न हो कि पंजाब का एक चौथाई भाग ईसाई बन चुका है। जैसे आपके अनुसार: आपको खालसा होने के नाते अलग स्वतंत्र देश 'खालिस्तान' लेने का अधिकार है, तो फिर ऐसा ही अधिकार ईसाइयों को भी होगा।

अपनी बात स्पष्ट करते हुए ठाकुर जी ने कहा कि खालसा एक अलग धर्म होने के नाते, आप एक अलग देश की मांग कर रहे हैं तथा कह रहे हैं कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है। अन्याय की जैसी बातें आप कर रहे हैं, ऐसी बातें ईसाई भी करेंगे। आप तो बाकी सिख संप्रदायों के साथ समान व्यवहार, इस समय भी नहीं कर रहे; तो खालिस्तान में ईसाइयों के साथ समान व्यवहार, आप कैसे कर सकते हो? ईसाइयों के साथ खालसे के समान व्यवहार; तो हो ही नहीं सकता। अन्य धर्मों के प्रति भेदभाव करना एक मानवी स्वभाव है; उसके अनुसार भेदभाव तो होना ही है।

ऐसी परिस्थितियों में, जब ईसाई अपने लिए एक अलग देश की मांग करेंगे; तो फिर, आपको अपने खालिस्तान में से, एक भाग निकालकर, ईसाइयों को देने में कोई कष्ट तो नहीं होगा? जैसे अभी भारत सरकार हर तरीके से खालिस्तान की लहर को दबाने की कोशिश कर रही है, क्या आप भी इसी प्रकार से; ईसाईस्तान की लहर को दबाने की कोशिश करेंगे? क्योंकि, जो कुछ भारत सरकार कर रही है; ऐसे ही पाकिस्तान सरकार पश्तूनों को व तुर्की सरकार कुर्दों दबाने के लिए कर रही है।

अंत में ठाकुर जी ने निम्रता सहित निवेदन करते हुए कहा कि खालसा जी, कृपया मेरी इस विनती पर गंभीरता से विचार कीजिए। खालिस्तान बनाने की लहर को चलाने से पहले, पंजाब के सभी ईसाइयों को खालसे बना लीजिए; ताकि वह सभी आपके साथ इस लहर में सम्मिलित हो सके। और, वह बाद में कभी भी पंजाब के ईसाइयों के लिए, अलग ईसाईस्तान की मांग नहीं उठाएं।

क्या खालिस्तान से निकलेगा ईसाईस्तान?: ठाकुर दलीप सिंह जी

कानपुर नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने खालिस्तान बारे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाब में खालिस्तान बनाने की लहर चलाने वाले सतिकारयोग खालसा जी! यदि किसी प्रकार से पंजाब में खालिस्तान बन ही जाता है; तो कुछ समय के उपरांत, पंजाब में रहने वाले ईसाई भी अपने लिए, धर्म-आधारित एक अलग देश की मांग करेंगे। जब ईसाई अपने लिए एक अलग ईसाईस्तान देश की मांग उठायेंगे; तो क्या आप प्रसन्नतापूर्वक शांति से, अपने खालिस्तान से एक टुकड़ा ईसाईस्तान का काटकर, उन्हें दे देंगे? यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि शायद आपको इस तथ्य का ध्यान ही न हो कि पंजाब का एक चौथाई भाग ईसाई बन चुका है। जैसे आपके अनुसारः आपको खालसा होने के नाते अलग स्वतंत्र देश 'खालिस्तान' लेने का

अधिकार है, तो फिर ऐसा ही अधिकार ईसाइयों को भी होगा। अपनी बात स्पष्ट करते हुए ठाकुर जी ने कहा कि खालसा एक अलग धर्म होने के नाते, आप एक अलग देश की मांग कर रहे हैं तथा कह रहे हैं कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है। अन्याय की जैसी बातें आप कर रहे हैं, ऐसी बातें ईसाई भी करेंगे। आप तो बाकी सिख संप्रदायों के साथ समान व्यवहार, इस समय भी नहीं कर रहे; तो खालिस्तान में ईसाइयों के साथ समान व्यवहार, आप कैसे कर सकते हो? ईसाइयों के साथ खालसे के समान व्यवहार; तो हो ही नहीं सकता। अन्य धर्मों के प्रति भेदभाव करना एक मानवी स्वभाव है; उसके अनुसार भेदभाव तो होना ही है। ऐसी परिस्थितियों में, जब ईसाई अपने लिए एक अलग देश की मांग करेंगे; तो फिर, आपको अपने खालिस्तान में से, एक भाग निकालकर, ईसाइयों को देने में कोई कष्ट तो नहीं होगा? जैसे अभी भारत सरकार हर तरीके से खालिस्तान की लहर को दबाने की कोशिश कर रही है, क्या आप भी इसी प्रकार से; ईसाईस्तान की लहर को दबाने की कोशिश करेंगे? क्योंकि, जो कुछ भारत सरकार कर रही है; ऐसे ही पाकिस्तान सरकार पश्तूनों को व तुर्की सरकार कुर्दों दबाने के लिए कर रही है। अंत में ठाकुर जी ने निम्रता सहित निवेदन करते हुए कहा कि खालसा जी, कृपया मेरी इस विनती पर गंभीरता से विचार कीजिए। खालिस्तान बनाने की लहर को चलाने से पहले, पंजाब के सभी ईसाइयों को खालसे बना लीजिए; ताकि वह सभी आपके साथ इस लहर में सम्मिलित हो सके। और वह बाद में कभी भी पंजाब के ईसाइयों के लिए, अलग ईसाईस्तान की मांग नहीं उठाएं।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

नई "भारतीय-भाषा" बनाइए। भाषा का झगड़ा मिटाईए। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

भारत को "विश्व गुरु" बनाने के लिए, राष्ट्र की तरक्की करने के लिए; हिन्दी तथा दक्षिणी भाषायों का झगड़ा मिटाने की आवश्यकता है; तभी हम एक होकर उन्नति कर सकते हैं। आप सब जानते हैं कि जहां पर भी झगड़े होते हैं; वहां पर उन्नति रुक जाती है तथा देश की हानि होती है। इस कारण भारतीयों में एकता करवाने के लिए, भारतीय-जनता को आगे आने की आवश्यकता है। राष्ट्र की तरक्की करने के लिए झगड़े मिटाकर एकता होनी चाहिए। हिन्दी तथा अन्य भाषायों का आपसी झगड़ा मिटाने के लिए सर्वोत्तम व सरल उपाय है: हम सभी भारतीय आपस में मिलकर, भारत में उपजी भाषायों के शब्द मिलाकर, एक नई भाषा बनाएं। जैसे: संस्कृत, हिंदी, मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली आदि। इस नई भाषा में उर्दू, फारसी जैसी विदेशी भाषाएं जिनकी लिपि तथा मूल विदेशी है: उनके शब्द शामिल नहीं किए जाएंगे। इस का नाम "भारतीय भाषा" रखें। उस "भारतीय भाषा" को धीरे-धीरे सभी अपना लें:परंतु, भाषा पर झगड़ा करना सदा के लिए बंद कर दें । सभी भारती भाषाओं के शब्द सम्मिलित होने के कारण, इस नई भाषा पर किसी को भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार से पूरे भारत की एक ही भाषा होगी और वह राष्ट्रभाषा भी बन जाएगी। परंतु, इसके लिए जनता की आपसी सहमति अत्यंत आवश्यक है।

भारतवासियो! यह काम हम सभी भारतवासी जनता ही आपस में मिलकर, कर सकते हैं। नेता लोग नहीं कर सकते। क्योंकि, हमें तो झगड़ा मिटा कर शांति स्थापित करनी है तथा देश की तरक्की करनी है।

मेरी विनती है: आइए! हम सब मिलकर एक नई "भारतीय भाषा का आविष्कार करें, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के शब्द सम्मिलित हों।

हिंदी, तामिल, मलयालम, कन्नड़, उड़िया का झगड़ा मिटाइए।

भारतीय भाषाएं मिलाकर नई "भारतीय- भाषा" बनाइए।

सभी को ज्ञात है कि स्वतंत्रता के उपरांत आज तक हमारी कोई भी एक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न 1947 से ही सभी पार्टियों की सरकारें करती रही हैं, परंतु दक्षिण वाले हिंदी को प्रवान नहीं करते हैं। सहमति ना होने के कारण ही, किसी को भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। विदेशी भाषा इंग्लिश का प्रयोग करके, सभी प्रांतों के आपसी पत्राचार होते हैं तथा हमारे न्यायालयों में आज भी इंग्लिश से ही कार्य होता है। विदेशी गुलामी का कलंक चिन्ह, "अंग्रेजी भाषा" को जब तक हम नहीं छोड़ते; तब तक हम सही रूप में स्वतंत्र नहीं हो सकते। विदेशी भाषा को पूर्ण रूप से त्यागने के लिए, हमें अपनी ही एक सर्वमान्य (सभी को प्रवान होने वाली) राष्ट्रभाषा चाहिए। जिन दक्षिणी प्रांतों के लोग, हिंदी को राष्ट्रभाषा परवान नहीं करते; उन सभी दक्षिणी प्रांतों की भाषाओं में बहुत शब्द ऐसे हैं जो हिंदी, संस्कृत तथा बाकी भारतीय भाषाओं से भी मिलते हैं। जैसे करुणा, गुरु, धर्म, दया, नगर, माँ, शास्त्र, अर्थ, रक्त, वर्ष, तिथि, लिंग, संधि, स्वतंत्र आदि। इस कारण, इन सभी भाषाओं के शब्दों को मिलाकर एक नई भारतीय-भाषा बन सकती है, जो सर्वमान्य हो सकती है। जब दक्षिणी प्रांतों की भाषाओं को हम नई "भारतीय भाषा" में स्थान देंगे और उन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हम हिंदी-भाषी लोग भी आरंभ कर देंगे: तो वह लोग भी हमारी उत्तरी भाषाओं के तथा हिंदी के शब्दों को अपनाना आरंभ कर देंगे।

यदि हम नई "भारतीय भाषा" बनाकर उसको लागू नहीं करते तो हमारे देश में तो अंग्रेजों की गुलामी, उनकी भाषा के रूप में सदा के लिए चलती ही रहेगी। भारत वासियो! आप ही विचार कीजिए कि हमें गुलामी का कलंक चिन्ह: विदेशी-अंग्रेजी-भाषा रखनी है: या उस गुलामी चिन्ह से मुक्त होकर अपनी नई भाषा बनाकर पूर्ण रूप से स्वतंत्र होना है। जय भारत

नई भारतीय-भाषा बनाइए भाषा का झगड़ा मिटाइएः ठाकुर दलीप सिंह जी

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। नामधारी पंथ के मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने भारत की राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए संदेश दिया कि भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए, राष्ट्र की तरक्की करने के लिए हिन्दी तथा दक्षिणी भाषायों का झगड़ा मिटाने की आवश्यकता है; तभी हम एक होकर उन्नति कर सकते हैं। आप सब जानते हैं कि जहां पर भी झगड़े होते हैं; वहां पर उन्नति रुक जाती है तथा देश की हानि होती है। इस कारण भारतीयों में एकता करवाने के लिए, भारतीय-जनता को आगे आने की आवश्यकता है। राष्ट्र की तरक्की करने के लिए झगड़े मिटाकर एकता होनी चाहिए। हिन्दी तथा अन्य भाषायों का आपसी झगड़ा मिटाने के लिए सर्वोत्तम व सरल उपाय है हम सभी भारतीय आपस में मिलकर, भारत में उपजी भाषायों के शब्द मिलाकर, एक नई भाषा बनाएं। जैसे- संस्कृत, हिंदी, मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली आदि। इस नई भाषा में उर्दू, फारसी जैसी विदेशी भाषाएं जिनकी लिपि तथा मूल विदेशी है-उनके शब्द शामिल नहीं किए जाएंगे। इस का नाम भारतीय भाषा रखें। उस भारतीय भाषा को धीरे-धीरे सभी अपना लें-परंतु, भाषा पर झगड़ा करना सदा के लिए बंद कर दें, सभी भारती भाषाओं के शब्द सम्मिलित होने के कारण, इस नई भाषा पर किसी को भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार से पूरे भारत की एक ही भाषा होगी और वह राष्ट्रभाषा भी बन जाएगी। परंतु, इसके लिए जनता की आपसी सहमति अत्यंत आवश्यक है। भारतवासियो यह काम हम सभी भारतवासी जनता ही आपस में मिलकर, कर सकते हैं। नेता लोग नहीं कर सकते। क्योंकि, हमें तो झगड़ा मिटा कर शांति स्थापित करनी है तथा देश की तरक्की करनी है।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

हमारा भारत देश, हमारी संस्कृति, हमारी भाषा और हम भारतीय: सर्वोत्तम हैं।

(ठाकुर दलीप सिंह जी)

नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने स्वतंत्रता दिवस पर संदेश देते हुए कहा "भारतीय स्वतंत्रता दिवस की पुण्यतिथि पर हमें सभी भारतीयों को आपसी मतभेद भुलाकर एकता करनी चाहिए। हमें एक होकर भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाओं तथा भारतीय धर्मों को प्रोत्साहन देना चाहिए। हम सभी भारतवासियों में आत्म-सम्मान आना चाहिए "हमारा देश, हमारी संस्कृति, हमारी भाषा और हम भारतीय सर्वोत्तम हैं। हम किसी से न्यूनतम नहीं"। जब तक यह भावना हमारे मन में नहीं आती, तब तक हम वास्तव में स्वतंत्र नहीं हैं"।

ठाकुर जी ने अपने संदेश में यह भी कहा "भारतवासियो! आत्म-सम्मान की भावना लाने के लिए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम एक प्रण करें "हम सभी अपनी-अपनी मातृभाषा पर गर्व करेंगे"। सभी भारतवासियों से विनम्र निवेदन है कि इस स्वतंत्रता दिवस पर आप भारत में वस्तुओं का निर्माण करने वाली सभी कंपनियों से यह आग्रह करें कि "भारत में निर्मित सभी वस्तुओं की पैकिंग पर, प्रांतीय तथा राष्ट्रीय भाषा अवश्य लिखी होनी चाहिए"। यदि सभी भारतवासी मिलकर यह मांग करेंगे, तो कंपनियां अवश्य ही लिखना शुरू करेंगी; क्योंकि, उनके ग्राहक तो हम भारतवासी ही हैं। यदि भारत में निर्मित सभी वस्तुओं की पैकिंग पर, प्रांतीय तथा राष्ट्रीय भाषा लिखी होगी, तो अपनी मातृभाषा के प्रति हमारे मन में प्रेम जागेगा और हमारे मन में आत्मसम्मान भी आएगा"।

हमारा भारत देश, हमारी संस्कृति, हमारी भाषा और हम भारतीय सर्वोत्तम हैं : ठाकुर दलीप सिंह

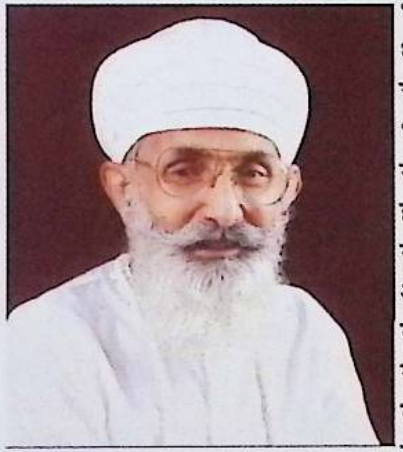

कानपुर नामधारी मुखी ठाकुर दलीप सिंह ने स्वतंत्रता दिवस पर संदेश देते हुए कहा भारतीय स्वतंत्रता दिवस की पुण्यतिथि पर हमें सभी भारतीयों को आपसी मतभेद भुलाकर एकता करनी चाहिए। हमें एक होकर भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाओं तथा भारतीय धर्मों को प्रोत्साहन देना चाहिए। हम सभी भारतवासियों में आत्म-सम्मान आना चाहिए हमारा देश, हमारी संस्कृति, हमारी भाषा और हम भारतीय सर्वोत्तम हैं। हम किसी से न्यूनतम नहीं। जब तक यह भावना हमारे मन में नहीं आती, तब तक हम वास्तव में स्वतंत्र नहीं हैं। ठाकुर ने अपने संदेश में यह भी कहा भारतवासियो! आत्म-सम्मान की भावना लाने के लिए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम एक प्रण करें हम सभी अपनी-अपनी मातृभाषा पर गर्व करेंगे। सभी भारतवासियों से विनम्र निवेदन है कि इस स्वतंत्रता दिवस पर आप भारत में वस्तुओं का निर्माण करने वाली सभी कंपनियों से यह आग्रह करें कि ‘भारत में निर्मित सभी वस्तुओं की पैकिंग पर, प्रांतीय तथा राष्ट्रीय भाषा अवश्य लिखी होनी चाहिए’। यदि सभी भारतवासी मिलकर यह मांग करेंगे, तो कंपनियां अवश्य ही लिखना शुरू करेंगी; क्योंकि, उनके ग्राहक तो हम भारतवासी ही हैं। यदि भारत में निर्मित सभी वस्तुओं की पैकिंग पर, प्रांतीय तथा राष्ट्रीय भाषा लिखी होगी, तो अपनी मातृभाषा के प्रति हमारे मन में प्रेम जागेगा और हमारे मन में आत्मसम्मान भी आएगा।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

नामधारी पंथ ने आयोजित किया दुनिया का पहला "भारतीय धर्म एकता सम्मेलन"।

(ठाकुर दलीप सिंह जी)

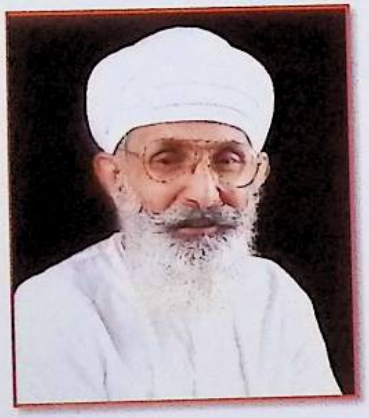

नामधारी पंथ के वर्तमान मुखी सतिगुरू दलीप सिंघ जी की पहल पर आज कलानौर (पंजाब) में होला मोहल्ला के दौरान दुनिया का पहला भारतीय धर्म एकता सम्मेलन आयोजित किया गया । नामधारियों के लिए यह बहुत सम्मान की बात है कि उन्होंने सब से पहले "भारतीय धर्म एकता सम्मेलन" करवाकर भारत के चारों धर्मों को एकजुट करने की पहल की है। इस से पहले भी बहुत सारी गतिविधियों की पहल नामधारियों को करने का सौभाग्य मिला हुआ है। जैसे: भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार, असहयोग आंदोलन की शुरुआत, सिख पंथ के उत्थान के लिए गुरु नानक नाम लेवा सम्मेलन, हिंदू सिख एकता सम्मेलन आदि सबसे पहले नामधारियों द्वारा शुरू किए गए थे। इस स्थान (कलानौर) की पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुए सूबा अमरीक सिंघ ने कहा कि अकबर की ताजपोशी इसी जगह से हुई थी और बंदा बहादुर जी को मुगलों ने सिख पंथ में दरार के कारण यहीं से गिरफ्तार किया था। आज उसी जगह से नामधारी संगत ने सिर्फ सिख पंथ की ही नहीं, भारत के सभी धर्मों की एकता की नींव रखी है। इस पावन अवसर पर भारत के चार प्रमुख धर्मों (हिंदू, सिख, बुद्ध, जैन) के आचार्य ने दर्शन दिए।

इन चारों धर्मों के आचार्यों ने सतिगुरू दलीप सिंघ जी द्वारा किए गए एकता प्रयासों की प्रशंसा की और उनका पूरा समर्थन किया। इस अवसर पर बोलते हुए महंत श्री बंसी दास जी महाराज ने कहा कि: हमारे चार धर्मों की कई परंपराएं आपस में जुड़ी हुई हैं। उदाहरण के लिए, चारों धर्मों की माला में 108 मनके होते हैं। उन्होंने कहा कि यह चारों धर्म भारतीय संस्कृति के चार स्तंभ हैं जिसके सहारे भारतीय संस्कृति का छत्र लहरा रहा है ।

उन्होंने कहा कि सतिगुरू कभी स्वार्थी नहीं होते, वह हमेश समाज कल्याण के लिए ही दुनिया में आते हैं। इसलिए सतिगुरू दलीप सिंघ जी महाराज भलाई का कार्य कर रहे हैं।

परम पूज्य दलाई लामा के प्रमुख शिष्य तेनजिन शिवांग लाहौल स्पीति से इतनी लंबी यात्रा के बाद विशेष रूप से यहाँ पधारे है। उन्होंने भी अपने शब्दों में "भारतीय धर्म एकता" का पूर्ण समर्थन करते हुए बुद्ध धर्म की तरफ पूर्ण समर्थन देने का ऐलान किया। भले ही वे कम हिंदी बोल पाते थे, लेकिन उन्होंने अपनी भावनाओं को हिंदी में व्यक्त किया।

जैन मुनी परम पूज्य पीयूष जी महाराज का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण स्वयं नहीं आ सके परंतु उन्होंने अपने विशेष सेवक श्री विमल जैन को भेजा। उन्होंने जैन मुनी जी महाराज और जैन धर्म की तरफ हर प्रकार का समर्थन करने का आश्वासन दिया और कहा कि हमारे चारों धर्मों की कई परंपराएं आपस में मिलती हैं और दुनिया में इस प्रकार का "भारतीय धार्मिक एकता" का इतना बड़ा प्रयास पहली बार हुआ है। तख्त श्री हरिमंदिर पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंघ जी ने भी इस पहल की प्रशंसा की और कहा कि मेरा लंबे समय से ठाकुर बाबा दलीप सिंघ जी से प्रेम है पर मैंने पहली बार मैं नाम के रसिए; नामधारियों का इतना बड़ी एकत्रता देखी है। उन्होंने कहा कि भारत के चारों धर्म वैदिक संस्कृति से उपजे हैं। इसलिए इनके बहुत सिद्धांत और परंपराएं आपस में मिलती हैं। उन्होंने कहा कि मैं इस शुभ कार्य के लिए हर संभव तरीके से बाबा दलीप सिंघ के साथ हूं और इनको एकता के लिए समर्थन देने का संकल्प लेता हूं।

इस महान समागम की समाप्ति के लिए; ठाकुर दलीप सिंघ जी ने अपने प्रवचन की शुरुआत इस प्रकार से की, "हम नामधारी राष्ट्रवादी हैं और राष्ट्रवादी होने के नाते भारतीय संस्कृति और भारतीय धर्मों की रक्षा करना हमारे गुरु जी आदेश है और हमारा परम कर्तव्य है। उन्होंने कुछ नई/विलक्षण बातें अपने भाषण में भी कही। जैसे: किसी भी देश, धर्म, संस्कृति, भाषा और राज्य को अलग नहीं किया जा सकता। क्योंकि वे पांच चीजें आत्मनिर्भर नहीं हैं और एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने दूसरी विलक्षण बात कही कि जिस तरह पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती, उसी तरह सभी धर्म समान नहीं होते। प्रमाण स्वरूप: भारत के चारों धर्मों ने कभी भी अपना धर्म का चलाने के लिए कभी विदेशों में जाकर, उन लोगों के सिरों का मूल्य नहीं डाला और वहां के मासूम बच्चों को काट कर, माताओं के गले में नहीं डाले। हालाँकि, मुगल राजाओं ने हम सिखों के सिरों का मूल्य डाला और मासूम बच्चों के

टुकड़े-टुकड़े करके, उनके हार बनाकर उनकी माताओं के गले में डाल दिए। उन्होंने कहा कि सभी आम मुसलमान क्रूर नहीं होते। परंतु, मुगल राजाओं ने भारतीयों पर इस तरह के घोर अत्याचार किए हैं। ईसाई अंग्रेजों ने चाहे मुगलों की तरह सीधे-सीधे हमारे भारतवासियों के सिर पर इनाम नहीं रखे और अधिक कत्लेआम नहीं किए; लेकिन इन्होंने अपना राज स्थापित करने के लिए, भारतवासियों को आपस में ही लड़वा-लड़वा कर, जगह-जगह पर हमें मरवाया। जैसे: पहली व दूसरी विश्व जंग में दो लाख केसाधारी सिखों की मौत हुई। आगे बोलते हुए उन्होंने यह भी कहा कि ईसाई और मुगलों के कागजों में हम सभी धर्म एक ही तरह के हिंदू और काफिर हैं।

इसलिए वह हमारे साथ बुरा व्यवहार करते वक्त कोई भेदभाव नहीं करते। उन्होंने आगे कहा, "आज से सात वर्ष पहले मैंने भारत के चारों धर्मों से एकजुट होने का अनुरोध किया था, जिसे स्वीकार नहीं किया गया। लेकिन मेरी वीडियो को सुनने के बाद अरब देशों के तीन प्रमुख धर्म (ईसाई, मुस्लिम और यहूदी) एकत्र होना शुरू हो गए हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण मुँह से बोलती यह दो तस्वीरें हैं। बर्लिन और आबूधाबी में, इन तीन धर्मों के साझा स्थान बनने आरम्भ हो गए हैं। मेरे बार-बार अनुरोध के बावजूद, किसी ने भी भारतीय धर्मों को एकजुट करने की कोशिश नहीं की। इसलिए एकता सम्मेलन का यह काम मुझे स्वयं करना पड़ रहा है।

आखिर में अपनी बात को समाप्त करते हुए उन्होंने गुरुवाणी के पंक्तियों "होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई" पढ़ कर सभी को गुरु जी के इन वचनों के मानते हुए एकजुट होने का विनती की। भगवान विष्णु, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध और भगवान सतिगुरू नानक देव जी ने शुभ उपदेश देकर लोगों के जीवन को सुखमय किया है।

सतिगुरू दलीप सिंघ जी ने इस बात पर बहुत बल दिया कि हमारे चारों भारतीय धर्मों का मूल सिद्धांत एक ही है "चौरासी लाख योनियों में से एक मनुष्य का जन्म बड़ी कठिनाई मिलता है। इस जीवन में गुरु धारण करके, नाम जप कर, शुभ कर्म करते हुए जीवन मुक्ति होना है तथा जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाना है। इस के साथ साथ दया, धर्म, पुनर्जन्म, मुक्ति, गुरु-शिष्य परंपरा आदि बहुत सारी बातें सभी धर्मों की एक समान है।" पहले *भारतीय धार्मिक एकता सम्मेलन* में हजारों की गिनती में संगतों ने भाग लिया।

नामधारी पंथ ने आयोजित किया दुनिया का पहला भारतीय धर्म एकता सम्मेलन

भारतीय संस्कृति की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य : सतगुरु दलीप सिंघ

हमारे चार धर्मों की कई परंपराएं आपस में जुड़ी हुई हैं : महंत बंसी दास

कलानौर/उत्तम हिन्दू न्यूज

नामधारी पंथ के वर्तमान मुखी सतगुरू दलीप सिंघ की पहल पर आज कलानौर (पंजाब) में होला मोहल्ला के दौरान दुनिया का पहला भारतीय धर्म एकता सम्मेलन आयोजित किया गया। नामधारियों के लिए यह बहुत सम्मान की बात है कि उन्होंने सब से पहले भारतीय धर्म एकता सम्मेलन करवाकर भारत के चारों धर्मों को एकजुट करने की पहल की है। प्रमुख धर्मों (हिंदू, सिख, बुद्ध, जैन) के आचार्यों ने सतगुरू दलीप सिंघ द्वारा किए गए एकता के प्रयासों की प्रशंसा की और उनका पूरा समर्थन किया। सम्मेलन में महंत बंसी दास महाराज ने कहा कि हमारे चार धर्मों की कई परंपराएं आपस में जुड़ी हुई हैं। उदाहरण के लिए, चारों धर्मों की माला में 108 मनके होते हैं। उन्होंने कहा कि यह चारों धर्म भारतीय संस्कृति के चार स्तंभ हैं जिसके सहारे भारतीय संस्कृति का छत्र लहरा रहा है। परम पूज्य दलाई लामा के प्रमुख शिष्य तेनजिन शिवांग लाहौल स्पीति ने भी

सम्मेलन में उपस्थित गणमान्य एवं उपस्थित संगत।

अपने शब्दों में भारतीय धर्म एकता का पूर्ण समर्थन करते हुए बुद्ध धर्म की तरफ पूर्ण समर्थन देने का ऐलान किया। भले ही वे कम हिंदी बोल पाते थे, लेकिन उन्होंने अपनी भावनाओं को हिंदी में व्यक्त किया।

जैन मुनि परम पूज्य पीयूष जी महाराज का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण स्वयं नहीं आ सके परंतु उन्होंने अपने विशेष सेवक विमल जैन को भेजा। उन्होंने जैन मुनि जी महाराज और जैन धर्म की तरफ हर प्रकार का समर्थन करने का आश्वासन दिया और कहा कि हमारे चारों धर्मों की कई परंपराएं आपस में मिलती हैं और दुनिया में इस प्रकार का भारतीय धार्मिक एकता का इतना बड़ा प्रयास पहली बार हुआ है। तख्त श्री हरिमंदिर पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंघ ने भी इस पहल की प्रशंसा की और कहा कि उन्होंने कहा कि भारत के चारों धर्म वैदिक संस्कृति से उपजे हैं। इसलिए इनके बहुत सिद्धांत और परंपराएं आपस में मिलती हैं। उन्होंने कहा कि मैं इस शुभ कार्य के लिए हर संभव तरीके से बाबा दलीप सिंघ के साथ हूं और इनको एकता के लिए समर्थन देने का संकल्प लेता हूं। महान समागम की समाप्ति के लिए; ठाकुर दलीप सिंघ जी ने अपने प्रवचन की शुरुआत इस प्रकार से की, हम नामधारी राष्ट्रवादी हैं और राष्ट्रवादी होने के नाते भारतीय संस्कृति और भारतीय धर्मों की रक्षा करना हमारे गुरु जी आदेश है और हमारा परम कर्तव्य है। उन्होंने कुछ नई/विलक्षण बातें अपने भाषण में भी कही। जैसे- किसी भी देश, धर्म, संस्कृति, भाषा और राज्य को अलग नहीं किया जा सकता। क्योंकि वे पांच चीजें आत्मनिर्भर नहीं हैं और एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने कहा कि मुगल राजाओं ने सिखों के मासूम बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करके, उनके हार बनाकर उनकी माँ के गले में डाल दिए। उन्होंने कहा कि सभी मुसलमान क्रूर नहीं होते। परंतु, मुगल राजाओं ने भारतीयों पर इस तरह के घोर अत्याचार किए हैं। उन्होंने आगे कहा, ÷आज से सात साल पहले मैंने भारत के चारों धर्मों से एकजुट होने का अनुरोध किया था, जिसे स्वीकार नहीं किया गया। लेकिन मेरी वीडियो को सुनने के बाद अरब देशों के तीन प्रमुख धर्म (ईसाई, मुस्लिम और यहूदी) एकत्र होना शुरू हो गए हैं। भारतीय धार्मिक एकता सम्मेलन में हजारों की गिनती में संगतों ने भाग लिया। गुरू का अटूट लंगर बाँटा गया।

ੴ सतिगुर प्रसादि।

सिखों को हेलमेट पहन लेनी चाहिए : आवश्यकता अनुसार। (ठाकुर दलीप सिंह जी)

नामधारी पंथ के मुखी ठाकुर दलीप सिंह जी ने भारत सरकार द्वारा; सिख फौजियों के हेलमेट पहनने के संबंध में चल रहे विवाद पर, अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "**सिखों को आवश्यकता अनुसार हेलमेट पहन लेनी चाहिए**"। सिख-फौजियों को हेलमेट पहनाने का भारतीय सरकार का सुझाव: सिख पंथ के लिए अत्यंत लाभदायक है; हानिकारक नहीं है। सरकार तो सिख फौजियों के जीवन की सुरक्षा के लिए यह सुझाव दे रही है। सिख फौजियों को जूड़े समेत हेलमेट पहनाने के पीछे, भारत सरकार का कोई बुरा आश्य नहीं है। इस कारण, सिख संस्थाओं को: बिना कारण, बिना विचार किए, भारत सरकार का विरोध नहीं करना चाहिए।

भारत सरकार द्वारा, सिख फौजियों की सुरक्षा हेतु हेलमेट पहनने के सुझाव पर, आजकल एक बहुत बड़ा विवाद चल रहा है। अकाल तख्त साहिब तथा सभी बड़ी सिख संस्थायों द्वारा; सिख फौजियों के हेलमेट पहनने का तीव्र विरोध किया जा रहा है: जो कि अनुचित तथा निर्मूल है। क्योंकि, हेलमेट पहनने से, सिख की सिखी में, कोई अंतर नहीं पड़ता। गुरु ग्रंथ साहिब जी अनुसार: सिख को; **हेलमेट**, **टोपी** पहनने की कोई मनाही नहीं तथा सिख के सिर पर दस्तार होनी भी जरूरी नहीं है। हेलमेट पहनने से, सिख धर्म तथा सिख के स्वरूप को, किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होती। समय के अनुकूल, हेलमेट पहनने के कारण, सिख की: सिखी में कोई अंतर नहीं पड़ता। आवश्यकता पड़ने पर, समय की नज़ाकत पहचानते हुए, सतगुरु गोबिन्द सिंह जी ने भी (मुगल फौज की आँखों में धूल झोंकने के लिए) अपना वास्तविक पहरावा छोड़कर; 'उच्च के पीर' का स्वरूप/वेस धारण किया था। इस लिए, प्रस्थितियों के अनुसार बाहरी स्वरूप/पहरावा में परिवर्तन करना उचित है; गलत नहीं, पाप नहीं।

सिख फौजियों के हेलमेट पहनने से, उनके जीवन की सुरक्षा होगी। और, सिख फौजियों का जीवित सुरक्षित रहने से, सिख धर्म को अत्यंत लाभ होगा। इस कारण, सिख फौजियों को अपने जीवन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हेलमेट पहनने से झिझकना नहीं चाहिए।

सिखों को हेलमेट पहन लेना चाहिए : ठाकुर दलीप सिंह

नई दिल्ली, 15 फरवरी (नवोदय टाइम्स) : सिख फौजियों के हेलमेट पहनने संबंधी विवाद के बीच नामधारी पंथ के मुखी ठाकुर दलीप सिंह ने केंद्र सरकार के फैसले को सही ठहराया है। साथ ही कहा कि सिख फौजियों को हेलमेट पहनने का सुझाव अत्यंत लाभदायक है। यह किसी भी सूरत में हानिकारक नहीं है। सरकार तो सिख फौजियों के जीवन की सुरक्षा के लिए यह सुझाव दे रही है। सिख फौजियों को जूड़े समेत हेलमेट पहनाने के पीछे, भारत सरकार का कोई बुरा आशय नहीं है। इस कारण, सिख संस्थाओं को बिना कारण, बिना विचार किए, केंद्र सरकार का विरोध नहीं करना चाहिए।

सिख फौजियों को हेलमेट पहनने के केंद्र के सुझाव का नामधारी पंथ ने किया समर्थन

उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा सिख फौजियों की सुरक्षा हेतु हेलमेट पहनने के सुझाव पर आजकल एक बहुत बड़ा विवाद चल रहा है। अकाल तख्त साहिब तथा सभी बड़ी सिख संस्थाओं द्वारा सिख फौजियों के हेलमेट पहनने का तीव्र विरोध किया जा रहा है। नामधारी प्रमुख ने इस विरोध को गलत बताया है। उन्होंने कहा कि हेलमेट पहनने से सिख की सिखी में कोई अंतर नहीं पड़ता है। गुरु ग्रंथ साहिब जी के अनुसार सिख को हेलमेट, टोपी पहनने की कोई मनाही नहीं है। सिख के सिर पर दस्तार होनी भी जरूरी नहीं है। हेलमेट पहनने से सिख धर्म तथा सिख के स्वरूप को किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होती। समय के अनुकूल हेलमेट पहनने के कारण सिख की सिखी में कोई अंतर नहीं पड़ता। आवश्यकता पड़ने पर समय की नजाकत पहचानते हुए, सतगुरु गोबिन्द सिंह जी ने भी (मुगल फौज की आंखों में धूल झोंकने के लिए) अपना वास्तविक पहरावा छोड़कर 'उच्च के पीर' का स्वरूप धारण किया था।

नामधारी सिख

Website: www.namdhari-sikhs.com

Contact: +91-90410 00625